तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

वार्षिक पत्रिका

केंद्रीय विद्यालय आदिलाबाद

अभिव्यक्ति

2023-24

अभिव्यक्ति

वार्षिक पत्रिका

2023-24

केंद्रीय विद्यालय आदिलाबाद

शिक्षा मंत्रालय | भारत सरकार

निधि पाण्डे

आयुक्त

संदेश

केन्द्रीय विद्यालय संगठन की हीरक जयंती के अवसर पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं। शिक्षा के लिए समर्पित साठ वर्षों की यात्रा का यह उत्सव हम सभी के लिए अत्यंत हर्ष का विषय है, और हम सबको कृतज्ञता के भाव से भर देता है। हमें गर्व है कि हम सबने विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में अपना हरसंभव योगदान दिया है।

हीरक जयंती सिर्फ इन 60 वर्षों के सफर का ही नहीं, अपितु यह हमारे शिक्षकों, कर्मचारियों, और विद्यार्थियों के समर्पण एवं परिश्रम का परिचायक है। एक संस्थान के रूप में केन्द्रीय विद्यालय संगठन शिक्षा के क्षेत्र में एक दीपक की भांति प्रकाशित है। यह हमारे लिए अत्यंत गर्व का विषय है कि 60 वर्षों की इस दीर्घ यात्रा के दौरान हमारे केन्द्रीय विद्यालय अनगिनत जिंदगियों में सकारात्मक बदलाव लाए हैं।

संगठन की इस अद्भुत सफलता के पीछे हमारे शिक्षकों, अधिकारियों और सभी सदस्यों का बहुमूल्य योगदान रहा है। आपके संघर्ष, समर्पण और साझेदारी के बिना, यह सफलता संभव नहीं थी। आज हम गर्व से यह कह सकते हैं कि हमने उस संकल्प को सफलता की ऊंचाइयों तक पहुंचाया है जिसे लेकर केन्द्रीय विद्यालय संगठन की नींव रखी गई थी। इस संगठन ने सर्वदा विद्यार्थियों का एक बेहतर भविष्य की दिशा में मार्गदर्शन किया है। आज, जब हम पीछे मुड़कर देखते हैं तो संगठन के प्रत्येक हितधारक के समर्पण और सहयोग का आभास होता है।

सफलता के इस शिखर तक पहुंचने में केन्द्रीय विद्यालय संगठन से जुड़े प्रत्येक सदस्य का योगदान सराहनीय है। मैं केन्द्रीय विद्यालय संगठन के इस स्वरूप को गढ़ने के लिए अपने वर्तमान और पूर्व शिक्षकों को विशेष रूप से हार्दिक बधाई देती हूँ।

मेरा दृढ़ विश्वास है कि सेवा और समर्पण का यह सफर अनवरत जारी रहेगा।

अनेक शुभकामनाओं सहित,
15 दिसंबर, 2023

(निधि पाण्डे)
आयुक्त

Deputy Commissioner Message

It gives us an immense pleasure and ecstasy to present the new comprehensive website of Kendriya Vidyalaya Sangathan, Hyderabad Region.

It is a compendium that mirrors multifarious activities that go on throughout the year for the harmonious and all round development of the future citizens, as well as their accomplishment in the different fields. Education, today, is not limited to a narrow space, it embraces, the depth of knowledge, the culture of character and the blending of personality. KVS has taken a pioneer initiative in providing unlimited opportunities to students to excel and prove their mettle in various fields. It is an institution with the underlying aims of education and education psychology. In a secular environment educational and co-curricular activities are a common Feature. Competitions are organized at different levels to promote national integration. As the teacher too has a pivotal role to play in the educational field .We have a team highly qualified Principals, teachers selected on all India merit basis who are fully devoted to their duties and responsibilities towards society and nation at large. Besides command over their subject they are well equipped with the latest technology of learning and developments taking place in the field of education. Ample opportunities are being provided to chisel their knowledge through literary interactions at Vidyalaya level, during subject committee meetings and staff meeting, through orientation and refresher courses and through workshops and seminar conducted at Regional and All India level. No tuition fee is charged from any students up to class-VIII and from girls even upto class-XII. 25% of seats in class-I are filled up by the children belonging to socially disadvantaged and economically weaker sections of society under RTE. Children admitted under this Act receive free education up to class-VIII.

This website will display information on administration,infrastructure, scholastic and non- scholastic pursuits, latest events, attainments and achievements. I am thankful to Principals, Teaching & Non-Teaching Staff and Students of various KVs running under this Region for consistent effort to hold our flag high....Jai Hind

Dr. D. Manjunath
Deputy Commissioner

यह जानकर अपार हर्ष हुआ है कि केंद्रीय विद्यालय, आदिलाबाद अपनी वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन करने जा रहा है। विद्यालय पत्रिका हमेशा से नवोदित रचनाकारों के लिए एक सशक्त मंच बनी है, साथ ही विद्यालय में साल भर चली गतिविधियों एवं उपलब्धियों को उजागर करने का भी माध्यम है। मैं आशा करती हूँ कि यह पत्रिका अधिक से अधिक बच्चों के अंदर छिपे रचनात्मक कौशल का विस्तार करेगी। किसी भी पत्रिका में पहली बार नाम छपना एक सुखद अनुभूति होती है, मैं उन सभी विद्यार्थियों को बधाई देती हूँ, जिनकी रचनाएं इस पत्रिका में प्रकाशित होने जा रही हैं।

आशा है कि पत्रिका को आकर्षक एवं रचनात्मक बनाने के लिए प्रकाशन से जुड़े विभिन्न बिंदुओं जैसे – शोध, सामग्री चयन व डिज़ाइन आदि पर विशेष ध्यान दिया जाएगा, जिससे पाठकों के हाथ में एक रचनात्मक एवं त्रुटिहीन पत्रिका पहुंचे। इसे ई-पत्रिका के रूप में वर्षवार विद्यालय की वेबसाइट पर भी उपलब्ध कराया जाए, ताकि पत्रिका का ई-संकलन वर्षों बाद भी सबके लिए उपलब्ध हो।

पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं प्राचार्या को हार्दिक शुभकामनाएं।

मनोनीत अध्यक्ष
श्रीमती खुशबू गुप्ता , आईएएस
एडिशनल कलेक्टर, आदिलाबाद

मानव जीवन को विकसित करने के लिए शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा यह देश अपने हजारों साल की संस्कृति को संजो कर, एवं भविष्य में दुनिया के विकसित देशों के व्यक्तियों के साथ कदम से कदम मिला कर चल सकेगा।

21वीं शताब्दी में मानव, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी द्वारा, ऐसी क्रान्ति लायेंगे जो कल्पना से परे होगा और मानव का दायरा इस संसार तक ही सीमित न रह कर बाह्य जगत से जुड़ेगा। हमारा निश्चय है कि हम अपने विद्यार्थियों को उत्कर्ष शिक्षा केन्द्र प्रदान करें, जो उन्हें आर्थिक रूप से सक्षम एवं स्वावलम्बी भारतीय नागरिक के रूप में सुसज्जित करें। यह संस्थान ऐसे हों जो उत्तम शैक्षणिक आधारभूत संरचना और सर्वश्रेष्ठ संकाय के द्वारा छात्रों के ज्ञानोपार्जन के साथ अनुशासन व चरित्र निर्माण में सहयोग प्रदान करें एवं अध्यापकगण, छात्र एवं छात्रायें इस शताब्दी के महायज्ञ में कदम से कदम मिलाकर बढ़ें और अपने देश को अपने समय में ही विकसित देश के रूप में देखें।

मेरी शुभकामनायें!

प्रभारी प्राचार्या

श्रीमती जी. विजयलक्ष्मी जी

केन्द्रीय विद्यालय आदिलाबाद

अनुक्रमणिका

लेख	पृष्ठ संख्या
आवरण - I	
आवरण - II	I
आयुक्त संदेश	II
उपायुक्त संदेश	III
चेयरमैन संदेश	IV
प्राचार्या संदेश	V
अनुक्रमणिका	VI
संविधान की उद्देशिका	VII
हिन्दी विभाग	1 से 19
संस्कृत विभाग	20 से 32
अंग्रेज़ी विभाग	33 से 46
मेरा पुस्तकालय	47 से 50
Art Education	51 से 59
Work Education	60 से 61
Artificial Intelligence	62 से 65
Counsellor's Desk	66 से 67
शिक्षकों और छात्रों की उपलब्धियाँ	68 से 72
विद्यालय गतिविधियाँ	73 से 91
Our Team	92 से 94
आवरण	95

पत्रिका रूपरेखा
अमित वर्मा
टी. जी. टी. कला शिक्षा

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता

और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं ।

हिन्दी विभाग

लेख	पृष्ठ संख्या
बढ़े चलो - मनोज	2
तत् त्वं पुषन् अपावृणु - राजेश कुमार	3
कला क्या है ? - अमित वर्मा	4
बच्चे - हेमंत कुमार	5
मैं बहुत ख़ास हूँ - बाम राहुल	6
शिक्षा में प्रौद्योगिकी - शशिकांत ओला	7-8
रंग ही रंग - श्रीज़ा मोतिकर	9
भ्रष्टाचारी से हिंदुस्तानी - सुरेंद्र कुमार	10
शारीरिक शिक्षा और खेलों का महत्व - ओजस सोनी	11
हम बच्चे - एम आदित्य	12
अपना देश - जावलि प्रिया	13
बेटी है कोई बोझ नहीं - सौम्या	14
प्रकृति का संदेश - शिवमणि	15
हट्टा कट्टा मोबाइल - चैत्रा	16
चिड़िया - अनुष्का पात्रा	17
हिन्दी - स्वेता पद्मा साहू	18
मेरी पाठशाला - तारुन्या	19

मनोज
टी. जी. टी. हिन्दी

बढ़े चलो

फूल बिछे हों या कांटे हों,
राह न अपनी छोड़ो तुम।
चाहे जो विपदायें आयें,
मुख को जरा न मोड़ो तुम।
साथ रहें या रहें न साथी,
हिम्मत मगर न छोड़ो तुम।
नहीं कृपा की भिक्षा मांगो,
कर न दीन बन जोड़ो तुम।
बस ईश्वर पर रखो भरोसा,
पाठ प्रेम का पढ़े चलो।
जब तक जान बनी हो तन में,
तब तक आगे बढ़े चलो।

राजेश कुमार
टी.जी.टी. संस्कृत

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

तत् त्वं पुषन् अपावृणु

हिरण्यमयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।
तत् त्वं पूषन्! अपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये॥

इस मन्त्र का उल्लेख वैदिक साहित्य में दो स्थानों पर मिलता है। इस मन्त्र का मूल यजुर्वेद के 40वें अध्याय में मिलता है। तत् पश्चात् ईशावास्य उपनिषद में भी इस मन्त्र का उल्लेख है। यजुर्वेद का चालीसवाँ अध्याय ही ईशावास्य उपनिषद के रूप में प्रसिद्ध है।

इस मन्त्र का शाब्दिक अर्थ है कि सत्य का मुख सुवर्णमय पात्र से ढका हुआ है।हे पालक ईश्वर! उस सत्य धर्म के दिखाई देने के लिये, तू उस आवरण को हटा दे।

प्रस्तुत मन्त्र में परमात्मा से सत्य के अन्वेषण में आने वाली बाधाओं को दूर करने की प्रार्थना की गई है। मनुष्य के कर्त्तव्य का विधान करते हुए उपनिषद् ने मनुष्यों को चेतावनी दी है कि इन कर्त्तव्यों का पालन करने में सच्चाई होनी चाहिए अन्यथा इनकी उपयोगिता न रहेगी ,परन्तु संसार में सचाई के छिपा देने के भी साधन मौजूद हैं, जिनसे वह दबा दी जाती है। उन्हीं साधनों की ओर मन्त्र में संकेत किया गया है।

सुवर्णमय पात्र अर्थात् संसार की चमक दमक वाली चीजें ही वे पदार्थ हैं , जो मनुष्य को प्रलोभन में लाकर उसे सत्य पथ से विमुख कर दिया करते हैं। मनुष्य क्यों चोरी करता है ? धन के लालच से, मनुष्य क्यों किसी को धोखा देता है ? क्यों किसी को ठगता है ? धन के लालच से , मनुष्य क्यों अदालतों में झूठी गवाही देता है ? धन के लालच से। सत्यता से विमुख होने के ये और इसी प्रकार के प्रलोभन ही कारण हुआ करते हैं । इसीलिए मन्त्र में प्रार्थना की गयी है कि पूषन् (पालक ईश्वर) इस प्रलोभन का आवरण सत्यता के ऊपर से उठ जाये, जिससे सत्यता हमसे और हम सत्यता से पृथक न हों । सत्यता का इतना महत्व क्यों है? केवल इसलिये कि सत्यता का ही दूसरा नाम धर्म है ।सत्य और धर्म वास्तव में एक ही वस्तु हैं । सत्य से धर्म और धर्म से सत्य भिन्न नहीं । इसलिये सत्य को प्राप्त करने के लिये सत्य से पृथक् नहीं होना चाहिये। किन्तु उसे पूर्ण रीति से प्राप्त कर लेना चाहिये ॥इसलिये उपनिषद् ने इस मन्त्र में चेतावनी दी है कि ऐसी महत्त्वपूर्ण वस्तु अर्थात् सत्य आवरण रहित ही रहनी चाहिये और इसलिये मनुष्य का कर्त्तव्य है कि उस पर सुवर्णमय पात्रों अर्थात् प्रलोभनों का आवरण न पड़ने दें । तभी वह अपने कर्त्तव्यों के पालन करने और उद्देश्य को प्राप्त कर लेने में सफल हो सकता है । कर्त्तव्य विधान के बाद उसकी पूर्ति के लिये ईश्वर से प्रार्थना की गई है ।

इस मन्त्र के सत्य पर बल देने महत्व को देखते हुए केन्द्रिय विद्यालय संगठन द्वारा इस मन्त्र के एक अंश "तत् त्वं पूषन् अपावृणु" को अपने ध्येयवाक्य या आदर्शवाक्य के रूप में स्वीकृत किया गया है।

अमित वर्मा
टी. जी. टी. कला शिक्षा

कला क्या है ?

कला मानवीय अभिव्यक्ति का एक महत्वपूर्ण माध्यम है जो संवेदनात्मक, रचनात्मक, और रूचिकर अभिव्यक्ति के रूप में काम करता है। यह विविधता, विचार, और भावनाओं को साझा करने का माध्यम होता है। कला कई रूपों में प्रकट हो सकती है, जैसे चित्रकला, संगीत, नृत्य, नाट्य, फिल्म, साहित्य, और शिल्पकला। कला समाज, संस्कृति, और ऐतिहासिक समय के मूल्यों का प्रतिबिम्ब करती है और समाज को प्रेरित करती है अथवा सोचने पर मजबूर करती है।
कला एक विशाल और विविध विषय है जो मानव समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह क्रिएटिविटी, स्वतंत्रता, और अभिव्यक्ति का साधन है जो विभिन्न रूपों में उपस्थित होता है। इसलिए, कला विषय का अध्ययन और समझना महत्वपूर्ण है।

कला कई रूपों में उपलब्ध है। पहले आता है दृश्य कला जिसमें चित्रकला, मूर्तिकला, आदि शामिल हैं। यह कला रंग, रेखा, आकार, और अन्य तत्वों का उपयोग करती है जो अभिव्यक्ति के लिए माध्यम होते हैं। फिर आती है संगीत, जो ध्वनि, स्वर, और ताल के माध्यम से भावनाओं को व्यक्त करता है। नृत्य कला में शारीरिक आवाज, नृत्य, और अभिव्यक्ति के साथ मिलकर भावनाओं को बयां करते हैं।

अन्य विषयों में, नाट्य और रंगमंच कला अभिनय, संवाद, और नाटक के माध्यम से कथाओं और चरित्रों को जीवंत करते हैं। सिनेमा कला में चलचित्र, डॉक्यूमेंट्री, और अन्य मीडिया के माध्यम से कहानियों को दर्शकों के सामने प्रस्तुत किया जाता है। इसके अलावा, साहित्य कला शब्दों के माध्यम से कथाओं, कविताओं, और निबंधों को प्रस्तुत करती है।

कला की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह समाज को परिभाषित करने, आत्मा को समझने, और विभिन्न संस्कृतियों के बीच समझौते करने में मदद करती है। कला एक प्रेरणास्त्रोत है जो विचारों को स्पष्ट करती है, विवेक को बढ़ाती है, और समाज को संवाद के रूप में एकजुट करती है। इसलिए, कला का अध्ययन और प्रशंसा विभिन्न समाजों में अभिवृद्धि और समृद्धि की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान करता है।

बच्चे

हेमंत कुमार
टी. जी. टी. गणित

बच्चे जग रौशन करते हैं।
शीतल समीर सा बहते हैं।।

बच्चे हैं फूलों की क्यारी ।
इसे बनती वसुधा न्यारी ।।
जाति ,धर्म ,मजहब ना जाने,
ना जाने कोई दुनियादारी।।
अनसूईया माँ की गोदी में
बालक त्रिदेव भी रहते हैं ।।
बच्चे जग रौशन करते हैं ।

शिशु निर्मल गंगा जल है।
जग के माथ के संदल हैं ।
ये ही तो स्वर्णिम कल हैं।
रिश्तों के धागे मलमल हैं ।
ये अपरिमित क्षमताधारी,
ये सूरज भी ग्रस सकते हैं।।
बच्चे जग रौशन करते हैं।

ये आज्ञाकारी संस्कारी हैं ।
ये जन्नत की फुलवारी हैं।।
तोतली बोली अति प्यारी है।
यही राधा और बनवारी हैं।
हैं इक ऐसी औषधि ये नन्हे
जो सबकी थकान हरते हैं।।
बच्चे जग रौशन करते हैं।।

बाम राहुल
प्राथमिक शिक्षक

मैं बहुत ख़ास हूँ

इस ब्रह्माण्ड में हर जीव बहुत खास है। जानवरों की हर प्रजाति अपना जीवन अपने-अपने अंदाज में जीती है। इस दुनिया में जन्मे हर नवजात को अपना जीवन जीने के लिए अपने माता-पिता और समाज से बहुत कुछ सीखना पड़ता है।

लेकिन हम इंसान बाकी जीवित प्राणियों से थोड़ा अलग हैं। यदि हम अपने विकास के इतिहास पर नजर डालें तो हम शारीरिक संरचना, भाषा, ज्ञान, भोजन की आदतों आदि में बहुत सारे बदलाव और विकास देख सकते हैं।

अब तक विकास जारी है और यह कभी नहीं रुकता।

जब बच्चों की बात आती है तो हर बच्चा अनोखा होता है।

कुछ बच्चे विषय अवधारणाओं को जल्दी समझ लेते हैं, कुछ बच्चे शिक्षा में औसत प्रदर्शन करते हैं लेकिन वे खेल और कला में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हैं। कुछ बच्चे धीरे-धीरे सीखते हैं। प्रत्येक बच्चे में सीखने की जन्मजात क्षमता होती है लेकिन हमें इसे उचित तरीके से प्रशिक्षित करना होगा ताकि बच्चा अपनी मस्तिष्क क्षमता का अधिकतम उपयोग कर सके।

यदि हम देखें तो बच्चा स्कूल में दाखिला लेने से पहले ही कुछ शब्द, वाक्य बोलना शुरू कर देता है। इसका मतलब यह है कि बच्चे ने स्कूल आने से पहले ही परिवार से ही भाषा सीखना शुरू कर दिया था। न केवल भाषा, खान-पान, व्यवहार, भावनाएँ आदि... वह अपने परिवेश से मिलने वाली सारी जानकारी लेता है। वह समझने की कोशिश करता है और उस परिवेश में ढल जाता है।

जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होता है उसका विकास अधिक जटिल हो जाता है। विकास ने अपनी जड़ें भावनात्मक, पारस्परिक, अंतर-व्यक्तिगत, आत्म-अवधारणा आदि जैसे विभिन्न क्षेत्रों में फैलाई हैं।

बच्चा अपने बचपन के सभी अच्छे और बुरे अनुभवों को जीवन भर साथ लेकर चलता है।

बच्चे का मनोविज्ञान और व्यवहार उसके घर, स्कूल के अतीत और वर्तमान अनुभवों, उसके दोस्तों के प्रभाव पर निर्भर करता है।

समाज का पहला दोष यह है कि ज्ञान और उत्कृष्टता के मामले में एक बच्चे की तुलना दूसरे बच्चे से की जाती है।

तुलना के बजाय, हमें बच्चे को भावनात्मक और नैतिक समर्थन देना होगा और उसे अपने प्रदर्शन में सुधार करने के लिए प्रोत्साहित करना होगा।

कभी-कभी तुलना के परिणाम प्रतिकूल होते हैं जबकि निरंतर समर्थन के परिणाम अनुकूल होते हैं।

जीवन को विभिन्न परिस्थितियों से निपटने के लिए विभिन्न कौशलों की आवश्यकता होती है। इसलिए, शैक्षिक और सह-शैक्षिक पहलुओं को पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है।

एक बच्चा, एक छात्र के रूप में स्कूल में प्रवेश करने से लेकर एक वयस्क के रूप में स्कूल से बाहर निकलने तक, हम शिक्षक के रूप में बच्चे के जीवन का हिस्सा बनने के लिए खुद को बहुत भाग्यशाली मानते हैं।

शशिकांत ओला
टी. जी. टी. कार्य अनुभव

शिक्षा में प्रौद्योगिकी

जीवन के विभिन्न पहलुओं में वैज्ञानिक आविष्कारों, नियमों, सिद्धांतों और प्रक्रियाओं का उपयोग प्रौद्योगिकी के उपयोग के अंतर्गत आता है। शैक्षिक प्रौद्योगिकी सहित कई प्रकार की प्रौद्योगिकियाँ मौजूद हैं। दूसरे शब्दों में, जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में वैज्ञानिक सिद्धांतों का अनुप्रयोग प्रौद्योगिकी कहलाता है। अत: प्रौद्योगिकी का अर्थ "विज्ञान की कला" है। इसलिए जब वैज्ञानिक, क्रमबद्ध और सुव्यवस्थित ज्ञान का उपयोग दैनिक कार्य करने के लिए किया जाता है तो उसे प्रौद्योगिकी का नाम दिया जाता है। "प्रौद्योगिकी" शब्द आमतौर पर मशीनों से जुड़ा होता है, लेकिन यह जरूरी नहीं है कि हमेशा मशीनों का ही प्रयोग किया जाए।

जब शिक्षण/सीखने की प्रक्रिया को आसान, सरल, कुशल और प्रभावी बनाने के लिए वैज्ञानिक, तकनीकी और मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों और विधियों का उचित उपयोग किया जाता है, तो यह शैक्षिक प्रौद्योगिकी के अंतर्गत आता है। जैसे-जैसे नई खोज होती जाती है, वैसे-वैसे इसके अर्थ, परिभाषा और स्वरूप में भी बदलाव आता जाता है। आज वैज्ञानिक एवं तकनीकी आविष्कारों ने मानव जीवन के हर पहलू को प्रभावित किया है। इनसे शिक्षा, अध्यापन और शिक्षण भी काफी प्रभावित हुआ है। शिक्षा के क्षेत्र में नवीनतम अनुसंधानों, खोजों एवं अन्वेषणों के परिणामस्वरूप ऐसी तकनीकों (अर्थात् कौशल) का विकास हुआ है, जो शिक्षा के सभी उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायक हो रही हैं। इन दक्षताओं और कौशलों को, जो विशेष रूप से विज्ञान पर आधारित हैं, शैक्षिक प्रौद्योगिकी का नाम दिया जाता है।

जिस प्रकार हमारे जीवन में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का उपयोग कर कम से कम समय में कम ऊर्जा खर्च कर अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करने की आवश्यकता है, उसी प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में शैक्षिक प्रौद्योगिकी की आवश्यकता है। शिक्षा में शैक्षिक प्रौद्योगिकी की आवश्यकता निम्नलिखित कारणों से है:

1. यह प्रभावी शिक्षा के लिए नवीनतम तरीकों के विकास पर सकारात्मक जोर देता है।
2. शैक्षिक प्रौद्योगिकी शिक्षण प्रक्रिया को वैज्ञानिक, वस्तुनिष्ठ, स्पष्ट, सरल, आसान, रोचक और प्रभावी बनाती है।
3. शैक्षिक प्रौद्योगिकी शिक्षण समस्याओं को हल करने के लिए उचित मार्गदर्शन देती है।
4. यह शिक्षण/सीखने की प्रक्रिया को प्रभावी बनाने के लिए उचित मार्गदर्शन प्रदान करता है, जैसे शिक्षण लक्ष्य निर्धारित करना, छात्रों के प्रारंभिक व्यवहार की जांच करना, उचित पाठ्यक्रम, उचित शिक्षण विधियों और रणनीतियों और सहायक सामग्रियों का चयन और आयोजन करना।
5. यह विचारों के आदान-प्रदान में संलग्न होने के लिए शिक्षकों और शिक्षार्थियों के बीच संचार के प्रभावी साधन प्रदान करता है।
6. इसमें विज्ञान, मनोविज्ञान और प्रौद्योगिकी की सभी प्रकार की कलाओं, विधियों, सामग्रियों, कौशलों, सिद्धांतों और उपकरणों का उपयोग शामिल है।
7. इसका उपयोग शैक्षिक तकनीकी उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक सीखने की स्थितियों को व्यवस्थित और नियंत्रित करने के लिए किया जा सकता है।
8. जिस प्रकार विज्ञान और प्रौद्योगिकी हमें हमारे दैनिक जीवन में कम ऊर्जा और प्रयास के साथ अधिक काम करने में मदद करती है, उसी प्रकार शैक्षिक प्रौद्योगिकी शिक्षण प्रक्रिया में ऊर्जा और समय की बर्बादी को नियंत्रित करती है।
9. यह व्यवहार परिवर्तन को मापने और शिक्षण प्रक्रिया के परिणामों की जांच के लिए उचित मूल्यांकन विधियों के विकास पर भी जोर देता है।
10. मूल्यांकन प्रक्रिया के बाद छात्रों के अंतिम व्यवहार की जांच करके अपेक्षित अपेक्षित सुदृढीकरण और समर्थन प्रदान करने पर भी जोर दिया जाता है।

हाल के वर्षों में तकनीकी दुनिया में एक महान विकास देखा गया है। अधिक से अधिक लोगों के डिजिटल मीडिया में आने के साथ, शिक्षकों के लिए यह आवश्यक है कि वे छात्रों को संलग्न करने के लिए अपने काम में उपलब्ध नवीनतम उपकरणों का उपयोग करें। छात्रों को सीखने में संलग्न करने के लिए, नवोन्वेषी होने की आवश्यकता है और नए विचारों को पेश किया जाना चाहिए ताकि छात्र जो सीख रहे हैं उसके प्रति उत्साहित हों। आज के शिक्षा उद्योग में इसके महत्व के कारण शैक्षिक प्रौद्योगिकी का उपयोग शिक्षकों के लिए आवश्यक हो गया है।

पिछले कुछ वर्षों में हुई तकनीकी प्रगति ने जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित किया है। जैसे-जैसे प्रौद्योगिकी अधिक सुलभ हो गई है, यह हमारे जीवन के हर हिस्से में प्रवेश कर गई है और परिणामस्वरूप, अब हम उम्मीद करते हैं कि हम जिस भी उपकरण का उपयोग करते हैं वह यथासंभव तकनीकी रूप से उन्नत हो। स्कूलों ने भी प्रौद्योगिकी को अपनी शिक्षा प्रक्रिया के एक अभिन्न अंग के रूप में अपनाया है और परिणामस्वरूप, वे अब कंप्यूटर विज्ञान कक्षाएं प्रदान करते हैं, जहां छात्र कंप्यूटर को कोड करना सीखते हैं और अपने काम या परियोजनाओं के लिए उनका उपयोग करते हैं।

इसलिए शैक्षिक प्रौद्योगिकी का उपयोग आज के शिक्षार्थियों के लिए महत्वपूर्ण हो गया है क्योंकि यह उन्हें बहुत तेज गति से सीखने का अवसर प्रदान करता है यदि वे ऐसे उपकरणों और कार्यक्रमों का उपयोग नहीं कर रहे होते।
लाभ शैक्षिक प्रौद्योगिकी के उपयोग से होने वाले विभिन्न लाभ इस प्रकार हैं:
1. यह उन सामग्रियों का व्यापक विकल्प प्रदान करता है जिन तक आसानी से पहुंचा जा सकता है
2. यह शिक्षार्थियों के संचार कौशल और स्कूल और कार्यस्थल सेटिंग्स में प्रदर्शन को बेहतर बनाने में मदद करता है
3. यह छात्रों के लिए एक मजेदार और आकर्षक सीखने का अनुभव प्रदान करता है
4. यह शिक्षार्थियों को किसी भी समय कहीं से भी इंटरनेट तक पहुंचने की अनुमति देता है
5. यह शिक्षार्थियों को नए कौशल सीखने और नया ज्ञान प्राप्त करने में मदद करता है
6. यह छात्रों को मानसिक और शारीरिक रूप से खुद को बेहतर बनाने की अनुमति देता है
7. यह शिक्षार्थियों को नई तकनीकी प्रगति के साथ अद्यतन रहने में मदद करता है

प्रौद्योगिकी का समाज में प्रभाव:-

आधुनिक दुनिया में प्रौद्योगिकी जीवन का एक महत्वपूर्ण घटक है। लोग टेक्नोलॉजी पर इतने निर्भर हो गए हैं कि इसके बिना रह ही नहीं पाते। प्रौद्योगिकी आज मानव जीवन के सभी क्षेत्रों में महत्वपूर्ण एवं उपयोगी है। इसने संचार और परिवहन को तेज़ और आसान बनाकर जीवन को आसान और आरामदायक बना दिया है।
यह अकल्पनीय है कि तकनीक के बिना जीवन कैसा होगा। प्रौद्योगिकी निम्नलिखित क्षेत्रों में उपयोगी है: परिवहन, संचार, संपर्क, शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और व्यवसाय।
प्रौद्योगिकी को ज्ञान के शरीर के रूप में परिभाषित किया जाता है जो तकनीकी साधनों के नवाचार, आविष्कार और अनुप्रयोग के साथ-साथ जीवन, समाज और पर्यावरण के साथ उनके अंतर-संबंधों से संबंधित है। या दूसरे शब्दों में, प्रौद्योगिकी का अर्थ कुछ विशिष्ट लक्ष्य प्राप्त करने या उद्योग में या रोजमर्रा की जिंदगी में उपयोग किए जाने वाले अनुप्रयोगों को बनाने के लिए वैज्ञानिक ज्ञान का उपयोग करना है।

हम अपने दैनिक जीवन में प्रौद्योगिकी पर उपयोग और भरोसा करते हैं, और हमारी तकनीकी आवश्यकताओं और मांगों में वृद्धि जारी है। प्रौद्योगिकी का उपयोग मनुष्यों द्वारा अन्वेषण, कनेक्ट, अध्ययन करने और काम करने के लिए किया जाता है। जिस तरीके से हम प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हैं, वह निर्णय लेता है कि इसके प्रभाव समाज के लिए फायदेमंद या हानिकारक हैं या नहीं।
नकारात्मक की तुलना में प्रौद्योगिकी मनुष्यों या समाज पर अधिक सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। यह हमारे जीवन को आसान बनाता है और संसाधनों या उपकरण प्रदान करके हमें इनाम देता है जो हमारे जीवन को अधिक आसान बनाता है।
निम्नलिखित कुछ सकारात्मक परिवर्तन हैं जो प्रौद्योगिकी हमारे जीवन को लाती हैं:
बेहतर संचार ,बेहतर शिक्षा और सीखने की प्रक्रिया ,मशीनीकृत कृषि ,सूचना प्राप्त करने में सरलता ,ज्ञान का वैश्वीकरण ,बेहतर समाजीकरण ,सुलभ शिक्षा आदि ।

प्रौद्योगिकी ने हमें और अधिक कुशल बनने में हमारी उत्पादकता में वृद्धि करने में बहुत मदद की है। इसने हमें समय और धन जैसे कई संसाधनों को बचाने में सक्षम होने में भी एक बड़ा सौदा करने में मदद की है और ये उन महान लाभ हैं जिन्हें अनदेखा नहीं किया जा सकता है। तकनीकी ने इसे वैश्विक गांव में बदलकर दुनिया में एकता लाने में अच्छी तरह से काम किया है, जिसने बदले में लोगों को अपने सांस्कृतिक, नस्लीय और महाद्वीपीय बाधाओं को आसानी से दूर करने में मदद की है।

सफलता के और जल्दी से बढ़ने की महत्वपूर्ण कुंजी है: तकनीकी ज्ञान और उसका सही उपयोग करना।

श्रीजा मोतीकर
प्राथमिक शिक्षक

रंग ही रंग

गोलू नामक एक छोटे से गाँव के छोटे बच्चे ने किसी दिन सोचा, "आज हम सभी रंगों का मिलन करके कुछ स्पेशल करेंगे।"गोलू ने पहले हरे रंग के बगीचे में जाकर बगीचे के पेड़ों के साथ खेलना शुरू किया। वह गाँववालों के साथ हरे कपड़ों में बदलकर हरे रंग की मिस्टी बना रहा था।फिर गोलू ने लाल रंग के गुलाब के पुष्पों की खेत में जाकर रंग भरा। सभी बच्चे मिलकर लाल कपड़ों में बदलकर बड़े प्यार से गुलाबों की खेत में खेले।उसके बाद, गोलू ने नीले आकाश के नीचे खुले मैदान में जाकर सभी समुद्री रंगों के साथ खेलना शुरू किया। उसने नीले कपड़ों में बदलकर नीला किला बनाया और सभी बच्चों को खेलने में शामिल किया।इसी तरह, गोलू ने सभी रंगों के साथ मिलकर एक रंगीन दिन मनाया और सभी बच्चों को सिखाया कि हर रंग अद्भुत है और हमें सभी को मिलकर एक-दूसरे का समर्थन करना चाहिए।

कविता (भ्रष्टाचारी मे हिंदुस्तानी)

सुरेंद्र कुमार
प्राथमिक शिक्षक (संगीत)

कविता अब मैं क्या कहूं इस देश के भ्रष्टाचार की,
यह तो उत्पत्ति है प्रलोभन के दूषित विचार की,
ईमान नाम का रह गया है हर कोई रिश्वत खाता है,
भ्रष्टाचार से जुड़ा हमारा देखा अनदेखा सा नाता है
भ्रष्टाचार की नींव तो उसी दिन रख दी जाती है,
जब बच्चों से काम करवाने के लिए उसे चॉकलेट दे दी जाती है,
अनजाने में बोया यही बीच एक विशाल वृक्ष बन जाता है,
भ्रष्टाचार से जुड़ा हमारा देखा अनदेखा सा नाता है,
क्या कहूं मैं अब कविता इस अंधकार रूपी अत्याचार की,
जिसमें दुखता है मन, जलती है आत्मा, गरीब और लाचार की,
देखो इस दानव ने देश की हालत क्या कर डाली,
सब ने भ्रष्टाचार की गोली बिन सोचे समझे खा ली,
गाड़ी के कागज पूरे नहीं पैसे ले देकर दफा करो
अरे कुछ तो समझो नासमझो तुम खुद के संग तो वफा करो
रिश्वत लेने देने का यही रवैया भविष्य का पत्थर बन जाता है
भ्रष्टाचार से जुड़ा हमारा देखा अनदेखा सा नाता है
भाई मेरा काम जरूरी है, यह हम सबकी मजबूरी है,
फिर जल्दी के चक्कर में कोई कैसे भी बच जाए,
चाहे काम करवाने के लिए जो मर्जी रिश्वत खाए,
कोई समय बचा ना चाहे तो कोई खुद ही बचना चाहता है,
भ्रष्टाचार से जुड़ा हमारा देखा अनदेखा सा नाता है
भ्रष्टाचार से अपने इस नाते का हम आज यहीं बहिष्कार करें,
आओ मिलकर कदम बढ़ाए खत्म ये भ्रष्टाचार करें,
ना रिश्वत लेंगे ना रिश्वत देंगे का प्रण हम साकार करें,
क्योंकि मैं भ्रष्टाचार रहित सुंदर हिंदुस्तान बनाना चाहता हूँ,
मैं भ्रष्टाचारी नहीं हिंदुस्तानी हूं, हिंदुस्तानी कहलाना चाहता हूँ,
भारत को स्वच्छ बनाने में हम मिलकर हिस्सेदार बने,
प्रथम सफाई के नाम पर इस दानव का संहार करें,
थोड़ी मुश्किलें आएंगी कुछ चाल ठोकरें खाएंगी
क्यों ना हम सब संग मिलकर इस कठिनाई को पार करें
भ्रष्टाचार रहित समाज का सपना मिलकर साकार करें
आओ मिलकर कदम बढ़ाए खत्म यह भ्रष्टाचार करें
ना रिश्वत लेंगे ना रिश्वत देंगे का प्रण हम साकार करें
अपनी इसी अलख को मैं जन-जन तक पहुंचाना चाहता हूँ
मैं भ्रष्टाचारी नहीं हिंदुस्तानी हूं, हिंदुस्तानी कहलाना चाहता हूँ,

ओज़स सोनी
शारीरिक एवं स्वास्थ्य शिक्षक

शारीरिक शिक्षा और खेलों का महत्व

बच्चों में शारीरिक शिक्षा और खेलों का महत्व और इसका विभिन्न पहलुओं में विकास

शारीरिक शिक्षा और खेलों का महत्व बच्चों के स्कूली जीवन में अद्वितीय है। इससे न केवल उनका शारीरिक स्वास्थ्य बना रहता है, बल्कि उनका मानसिक, आत्मिक और सामाजिक विकास भी होता है। यहाँ हम इस महत्वपूर्ण विषय पर गहराई से विचार करेंगे:

शारीरिक स्वास्थ्य:
खेल और शारीरिक शिक्षा का सम्बन्ध सीधे स्वास्थ्य से है। ये बच्चों को स्वस्थ और मजबूत बनाते हैं। योग, रनिंग, स्विमिंग, बास्केटबॉल, फुटबॉल, आदि खेल उनके शारीरिक आंतरिक और बाह्य विकास को प्रोत्साहित करते हैं।

मानसिक विकास:
खेल और शारीरिक शिक्षा में सक्रिय होने से बच्चों का मानसिक विकास भी होता है। यह उनकी चाबुकसी, संयम, धैर्य, और सहनशीलता को बढ़ाता है। खेलों में जीतने और हारने का अनुभव उन्हें जीवन के हर क्षेत्र में सफलता के साथ समझदारी सिखाता है।

आत्मिक विकास:
खेल और शारीरिक शिक्षा से बच्चे आत्मिक रूप से भी विकसित होते हैं। ये उनकी आत्मविश्वास, आत्मसमर्पण, और स्वाधीनता को बढ़ाते हैं। वे अपने क्षमताओं को समझते हैं और स्वयं को समर्पित और सक्रिय महसूस करते हैं।

सामाजिक विकास:
खेलों में भाग लेना सामाजिक विकास के लिए भी महत्वपूर्ण है। ये टीम वर्क, सहयोग, और समर्थन की भावना को बढ़ाते हैं। बच्चे सामूहिक रूप से काम करने और अन्यों का समर्थन करने की क्षमता विकसित करते हैं।

नैतिक विकास:
खेल और शारीरिक शिक्षा नैतिक विकास के लिए भी महत्वपूर्ण हैं। वे निष्ठावानता, संयम, और निष्ठा जैसी मूल्यों को सिखाते हैं। खेलों में नियमों का पालन करना और उत्साह में साझा करना उन्हें सही और गलत की पहचान करने में मदद करता है।

इस प्रकार, शारीरिक शिक्षा और खेलों का सम्बन्ध बच्चों के विभिन्न पहलुओं में विकास के साथ संबंधित है।

एम आदित्य
कक्षा 9

हम बच्चे

हम बच्चे हँसते गाते हैं।
हम आगे बढ़ते जाते हैं।
पथ पर बिखरे कंकड़ काँटे,
हम चुन चुन दूर हटाते हैं।
आयें कितनी भी बाधाएँ.
हम कभी नही घबराते हैं।
धन दौलत से ऊपर उठ कर,
सपनों के महल बनाते हैं।
हम खुशी बाँटते दुनिया को,
हम हँसते और हँसाते हैं।
सारे जग में सबसे अच्छे,
हम भारतीय कहलाते हैं

जावलि प्रिया
कक्षा 7

अपना देश

भोर भई पंछी चहचाहें
देते अपना मधुर सन्देश
आलसी बनकर मत सोचो
ये है ऋषि-मुनियों का देश

जहाँ चिरैवा भोर हुए
अब भी गीत सुनाती है
जहाँ हवाएँ खुशबू लेकर
सबके दर पर आती हैं।

संस्कृति तीज-त्योहारों में
सभ्यता सबके व्यवहारों में
मर्म बात का समझे
सब ही आँखों और इशारों में

जहाँ स्वयं खाने से पहले
पशु-पक्षी को देते हैं
जहाँ किसी आगन्तुक को
बाहें भरकर मिलते हैं।

जहाँ नहीं लागू होते
कलयुग के नियम-निर्देश
जहाँ चाँदनी रात विचरती
खोले अपने सुन्दर केश

बोलो यह अपना है देश।

सौम्या
कक्षा 8

बेटी है कोई बोझ नही !!

बेटी है कोई बोझ नही !!

बेटी है बोझ नहीं।

करना चाहती है कोई खोज नई,

खुशहाल करदेती सूना मौसम कोई,

बेटी है बोझ नहीं।

पिता की इमान वहीं,

माँ की मुस्कान वही,

लक्ष्मी की छाया वहीं,

बेटी है बोझ नहीं।

फूल सी नाजुक वही,

पर कमजोर उसको समझना नहीं,

पी.वी, साईना, मैरीकौम वहीं,

बेटी है बोझ नहीं।

बेटी है बोझ नहीं ॥

प्रकृति का सदेश

शिवामणि
कक्षा 7

प्रकृति का संदेश
चिड़ियों से है उड़ना सीखा,
तितली से इठलाना।
भवरों की गुंजन से सीखा,
राग मधुरतम गाना।
तेज लिया सूरज से हमने,
चांद से शीतल छाया।
टिम-टिम करते तारों की,
हम समझ गए सब माया।
सागर ने सिखलाई हमको,
गहरी सोच की धारा।
गगनचुम्बी पर्वत से सीखा।
हो ऊंचा लक्ष्य हमारा।
समय की टिक टिक ने समझाया,
सदा ही चलते रहना।
मुश्किल कितनी आन पड़े,
पर कभी न धीरज खोन।
प्रकृति के कण-कण में है,
सुंदर संदेश समाया।
ईश्वर ने इसके द्वारा ज्यों,
अपना रूप दिखाया

चैत्रा
कक्षा 6

हट्टा कट्टा मोबाइल

ये मोबाइल...
यों ही हट्टा कट्टा नहीं हुवा है
इसने बहुत कुछ खाया - पिया है ।

मसलन ....
ये हाथ की घड़ियाँ खा गया
ये चिट्ठी पत्रियाँ खा गया
इसने रेडियो खा दिया
टेप रिकार्डर कैसेटें कैमरे चबा गया । ये टार्च लाइटें खा गया
ये मोबाइल किताबें खा गया ।
इसने सैकड़ों मील की दूरियाँ पी हैं।पड़ोस की दोस्ती
मेल मिलाप खा गया
समय नही लोगों के पास
ये लोगों का वक्त खा गया ।
ये पैसे खा रहा है
ये रिश्ते खा रहा है।
ये लोगों की तंदुरुस्ती खा रहा है
ये लोगों को रोगी
बना रहा है ।
ये मोबाइल फोन
यों ही हट्टा कट्टा नहीं हुवा है।
इसने बहुत कुछ खाया पिया है ॥

अनुष्का पात्रा
कक्षा 5

चिड़िया

गीत सुरीले गाती चिड़िया
जन-जन को बहलाती चिड़िया
सूरज की किरणों से पहले उठकर
हमको रोज उठाती चिड़िया ।
इधर उधर से ही अपना खाना खाती चिड़िया,
तिनका तिनका इकट्ठा कर
अपना घर बनाती चिड़िया।
मेहनत करके दाना
इकट्ठा करती चिड़िया
डालों पर बैठ
अपना गाना गाती चिड़िया ।
उम्मीद और हौंसले की पहचान है चिड़िया,
हमको पाठ मेहनत का सिखाती चिड़िया ।
जिनकी शोभा उनके पंख
वह कहलाती चिड़िया।

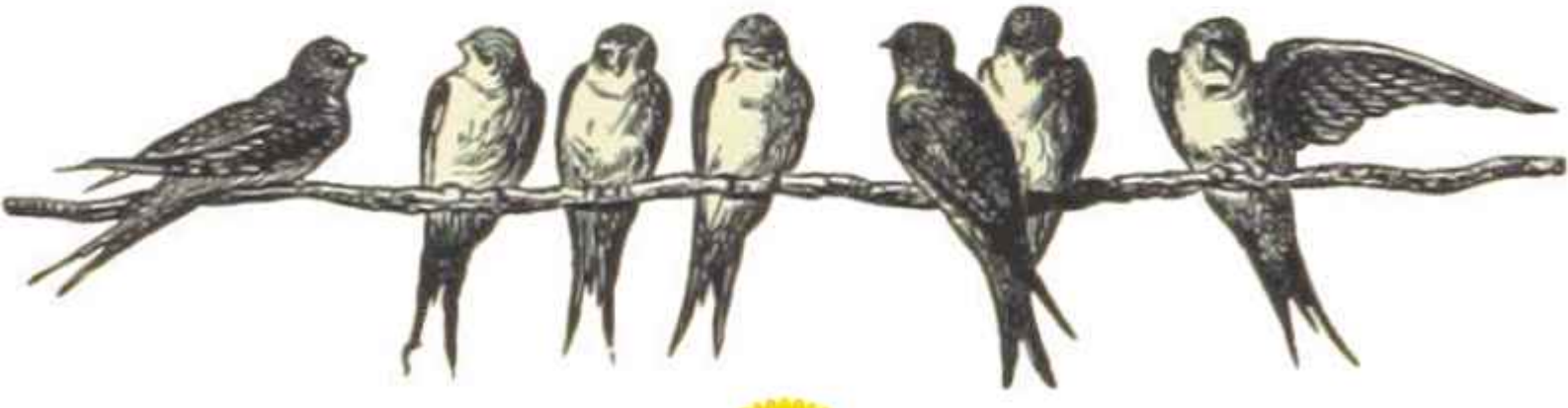

श्वेता पदमा साहू
कक्षा 5

हिन्दी

जन-जन की भाषा है हिन्दी,
भारत की आशा है हिन्दी,
जिसने पूरे देश को जोड़े रखा है,
वो मज़बूत धागा है हिन्दी।
हिंदुस्तान की गौरव गाथा है हिन्दी,
एकता की अनुपम परम्परा है हिन्दी,
जिसके बिना हिन्द थम जाय,
ऐसी जीवन रेखा है हिन्दी,
जिसने काल को जीत लिया है,
ऐसी कालजयी भाषा है हिन्दी,
सरल शब्दों में कहा जाय तो,
जीवन की परिभाषा है हिन्दी ।

मेरी पाठशाला

तारुन्या
कक्षा- 3

बहुत ही सुंदर, बड़ा ही निराला,
मेरा मन मंदिर, मेरी पाठशाला।
गर्व मेरा, दिखाता है जो ज्ञान का उजाला,
मेरे लिए सुनहरा तीरत, जो मुझे सँभाला।
मेरी गरिमा, मेरा भविष्य जो है सँवारा,
मेरी पाठशाला, मेरी आशियानों का सहारा।

संस्कृत विभाग

लेख	पृष्ठ संख्या
अभिव्यक्तिः - राजेश कुमार	21-22
छात्रजीवनम् - श्लोका	23
जननी-जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी - श्लोक	24
प्रदूषणम् - चेतन	25
यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः - अक्षरा	26
वर्षा ऋतुः - शिवमणि	27
वसुधैव कुटुम्बकम् - आशीष यादव	28
शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम् - देवी चतुर्या	29
सदाचारः - कार्तिक गौड़	30
समयस्य सदुपयोगः - वीणा	31
वसन्त-ऋतुः - सत्यजीत	32

राजेश कुमारः
प्र. स्ना. शिक्षकः, संस्कृतम्

अभिव्यक्तिः

अद्य संस्कृत शिक्षा क्षेत्रे 'अभिव्यक्तिः' इति एकः अंशः ऊनः दृश्यते। भाषायाः अभिव्यक्तिः द्विधा भवति । भाषणेन लेखनेन च । अतः भाषणं लेखनम् इति अभिव्यक्तिकौशले इति कथ्येते । क्रमिकः अभ्यासः, नियन्त्रितः अभ्यासः इत्यादिभिः कक्ष्यासु कार्यमाणैः अभ्यासैः भाषायाः चतुर्णाम् अपि कौशलानाम् अभ्यासाः कार्यन्ते इति वदन्ति। यदि तद् वास्तविकं तर्हि किमर्थं संस्कृतशिक्षकाः छात्राः च संस्कृतेन भाषणे लेखने च अक्षमाःघ् न केवलम् अक्षमाःण् अपि तु भाषणे लेखने च न प्रवर्तन्तेए न उत्सहन्ते च इति शिक्षाविदः अभिप्रयन्ति । अतः समस्यायाः मूलं पश्यामः चेत् संस्कृतशिक्षणे अभिव्यक्तेः अभ्यासस्य अपर्याप्तता अस्ति इति स्पष्टं भासते ।

पाठानां भागरूपेण छात्राः विविधानाम् अभ्यासानाम् अङ्गतया वाक्यानि वदेयुः लिखेयुः वा । परन्तु ते अभ्यासाः सीमिताः अल्पाः च । अभिव्यक्तिः नाम भाषायाः प्रयोगः । अर्थपूर्णप्रसङ्गेषु प्रयोगः । छात्रः स्वतन्त्रतया सहजतया च संस्कृतभाषायाः प्रयोगं कुर्यात् अर्थात् भाषणेन लेखनेन च स्वतन्त्रतया सहजतया च अभिव्यक्तिं कुर्यात् इति लक्ष्यसाधनाय अनुकूलं भाषाशिक्षणं चिन्तनीयम् ।

गतेषु द्विशते वर्षेषु संस्कृतशिक्षणस्य लक्ष्यं ब्रिटिशजनानां यत् लक्ष्यम् आसीत् तदेव आसीत् संस्कृतवाङ्मयस्य अवगमनम् अन्यभाषाभिः अनुवादः इति । व्यावहारिकरूपेण इदानीम् अपि तदेव अस्ति । न किमपि परिवर्तनं जातम् । अन्यभाषाभिः अनुवादाय अभिव्यक्तेः अभ्यासस्य आवश्यकता एव न भवति । अवगमनकौशलम् अनुवादकौशलं च पर्याप्तम् । अतः एव विद्यालयेषु महाविद्यालयेषु विश्वविद्यालयेषु च अभिव्यक्तेः अभ्यासं न कारयन्ति एव । सर्वे पाठाः परीक्षाः च अवगमनकौशलकेन्द्रिताः । शिक्षकप्राध्यापकादिपदेभ्यः क्रियमाणासु विज्ञापनासु साक्षात्कारेषु च अभ्यर्थिनः संस्कृतेन अभिव्यक्तेः सामर्थ्यस्य अनिवार्यता एव नास्ति । तेन एव संस्कृतस्य अवनतिः जाता । संस्कृतशिक्षायाः अभिवृद्धिः अपेक्षिता चेत् अभिव्यक्तिकौशलकेन्द्रिताः पाठाः चिन्तनीयाः ।

अभिव्यक्तिः इत्येषा तदा एव संस्कृतशिक्षणे व्यवहारे आगच्छेत् यदा छात्राणां शिक्षकाणां च मूल्याङ्कनम् अभिव्यक्तिसामर्थ्यकेन्द्रितं भवेत् । एतदर्थमेव बहुविधानां सामग्रीणां निर्माणं शिक्षकाणां प्रशिक्षणं छात्राणां निरन्तरं तदेककेन्द्रितः च अभ्यासः इति एतानि त्रीणि कार्याणि साधनीयानि। द्विशतस्य वर्षाणां दुर्नीतेः दुष्परिणामस्य निवारणाय न्यूनातिन्यूनं दशवर्षाणि आदेशम् आप्राथमिकविद्यालयविश्वविद्यालयम् आबालपण्डितम् आछात्रप्राध्यापकम् आशिक्षककुलपतिं सर्वे मिलित्वा संस्कृतच्छात्राणां शिक्षकाणां च अभिव्यक्तिसामर्थ्यवर्धनविषये एव चिन्तनं कुर्युःए कार्यक्रमान् कुर्युःए प्रशिक्षणं कुर्युः च । एतादृशं किञ्चन अभियानं यदि न क्रियेत तर्हि संस्कृतशिक्षाक्षेत्रे परिवर्तनस्य संभावना नास्ति ।

समस्यायाः मूलम् अन्यत् अपि किञ्चन अस्ति । छात्राणां शिक्षकाणां च अभिव्यक्तिसामर्थ्यं भवेत् इति सर्वे अङ्गीकुर्वन्ति । परन्तु तद् कथं साधनीयम् इति विषये प्राध्यापकाणां संस्कृतक्षेत्रस्य प्रमुखाणां च बहूनां कल्पना नास्ति वा इति भाति इति तेषां विषये अत्यन्तम् आदरपूर्वकम् एव अत्र वैचारिकीं चर्चां केवलं करोमि । कल्पना एतदर्थं नास्ति यतः काव्यशास्त्रादीनाम् आधारं विना ग्रन्थपङ्क्तिपाठनं विना शिक्षाशास्त्रसिद्धान्तपाठनं विना व्याकरणशास्त्रीयप्रक्रियापाठनं विना च केवलं मौखिकैः अभ्यासैः लेखनाभ्यासैः स्वनिर्मितैः विविधैः नूतनैः अभ्यासैः च छात्राणाम् स्वतन्त्रतया सहजतया सरलतया शुद्धतया सुन्दरतया च भाषाप्रयोगस्य सामर्थ्यम् इति तादृशम् अभिव्यक्तिकौशलं छात्राणां यथा भवेत् तथा तावद्दूरम् अभ्यासं कारयित्वा उपत्रिंशानां छात्राणां गणं निर्माय भाषाभ्यासकारणस्य स्वयम् अनुभवं सम्पादितवन्तः संस्कृतशिक्षाविदः कति सन्ति। विद्यालयीयशिक्षायां (द्वादशकक्ष्यां यावत् प्राक्शास्त्रिपर्यन्तं च) स्नातककक्ष्याणाम् आरम्भे, शिक्षकाणां प्रशिक्षणे च भाषाभ्यासकारणाय एतादृशः विशिष्टः विनूतनः अभिव्यक्तिकेन्द्रितः मार्गः अनुसर्तव्यः भवति खलु । तत् विद्यालयशिक्षकैः चिन्तनीयम्, अहं तु शास्त्रशिक्षणाय नियुक्तः, शिक्षाशास्त्रशिक्षणाय नियुक्तः, तत् मम कार्यं नैव इति केनापि न चिन्तनीयम् । इदानीं संस्कृतस्य अस्तित्वस्य प्रश्नः अस्माकं पुरतः अस्ति । अतः अस्माभिः सर्वैः अपि अभिव्यक्तेः अभ्यासकारणविषये चिन्तनीयम् ।

महाविद्यालयीयाः विश्वविद्यालयीयाः च प्राध्यापकाः एतस्मिन् विषये न प्रवृत्ताः इति कारणेन एव अद्यावधि संस्कृतशिक्षणे परिवर्तनं न जातम् । तेन एव कारणेन संस्कृतं दिने दिने ह्रीयमाणम् अस्ति । अतः संस्कृतोन्नयने प्राध्यापकानां शास्त्रविदां च पात्रम् अत्यन्तं महत्त्वपूर्णम् अस्ति ।

देशे विद्यमानानां सर्वेषां संस्कृताध्यापकानां संस्कृतच्छात्राणां च संस्कृतेन अभिव्यक्तेः अभ्यासः कथं कारणीयः इत्येव समस्यायाः मूलम् अस्ति।

संभाषणम् अभिव्यक्तिः इति द्वयोः पदयोः मध्ये मया कश्चन भेदः कल्प्यते । अद्य ते द्वे पदे संस्कृतशिक्षणे साङ्केतिके पारिभाषिके पदे इति उपस्थापयामि । संभाषणम् इति पदं भाषाभ्यासमार्गे प्रारम्भिकसोपानं प्रकाशयति । अभिव्यक्तिः इति पदं स्वतन्त्रतया सहजतया सरलतया शुद्धतया सुन्दरतया च भाषणेन लेखनेन च भाषाप्रयोगस्य सामर्थ्यस्य सम्पादनं यावत् मार्गं प्रकाशयति ।

संस्कृतेन अभिव्यक्तिः इति एषः विषयः अस्माकं सर्वेषां चर्चाविषयः भवेत्, कार्यविषयः भवेत्, आद्यताविषयः भवेत् च । शास्त्रशिक्षणेन सह, काव्यशिक्षणेन सह, सिद्धान्तशिक्षणेन सह च अभिव्यक्तिशिक्षणाय अपि अस्माभिः सर्वैः कश्चन समयः कल्पनीयः एव । एतत् कार्यम् एतदर्थमेव विद्यमानानां केषाञ्चित् कार्यम् इति स्थितिः न भवेत् ।

विद्यालयशिक्षकैः तु विशेषतया एतद्विषये चिन्तनीयम् । छात्रैः तु स्वस्य भविष्यतः उज्ज्वलतायै एतद्विषये चिन्तनीयमेव, नान्या गतिः ।

यदा 1948 तमे वर्षे इस्रायिलदेशः यदा स्वतन्त्रः जातः तदा विश्वस्य सर्वेभ्यः देशेभ्यः येहूदीयाः मातृभूमौ वासाय इस्रायिलम् आगताः । तदा ते सर्वे हिब्रूभाषां न जानन्ति स्म । पूर्वतनदेशभाषां जानन्ति स्म । अतः तेषां लक्षशः जनानां हिब्रूशिक्षणस्य अभियानं प्राचलत् । तदा तदानीन्तनः इस्रायिलस्य प्रधानमन्त्री अपि हिब्रूपाठनाय प्रतिदिनं घण्टां यावत् समयं दत्तवान् इति वदन्ति । अर्थात् सः हिब्रूपाठनकार्याय तावत् महत्त्वं दत्तवान् । तद्वत् संस्कृतक्षेत्रस्य प्रधानमन्त्रितुल्याः प्राध्यापकाः अपि अभिव्यक्तिप्रशिक्षणाय समयं दद्युः, विविधान् नवप्रयोगान् कुर्युः, तेन च संस्कृतशिक्षणक्षेत्रे वेगेन प्रचलतः ह्रासस्य गतिरोधं कुर्युः इति मम निवेदनम् ।

आरभ्यताम् अभिव्यक्तेः अभ्यासाय आभारतम् अभिनवम् अभियानम् !

छात्रजीवनम्

कु. श्लोका
कक्षा नवमी

छात्रकालः मनुष्यजीवनस्य सुवर्णमयः कालः । अस्माकं पुरातनग्रन्थेषु अस्य ईदृशं महत्त्वं यत् अनेन मनुष्यस्य द्वितीयं जन्म मन्यते, स च द्विजः उच्यते । वस्तुतः छात्रजीवनं मनुष्यस्य द्वितीयं जन्म एव विद्यते । यदा मनुष्यः जायते, तदा सः पशुतुल्यः एव भवति, केवलं खादितुं पातुं स्वपितुं च जानाति । परन्तु छात्रजीवने एव सः ज्ञानं लभते, परेषां दुःखम् अवबोद्धुं, धर्मस्य तत्त्वं ज्ञातुं, परमशक्तिविषये अनुभवितुं, महापुरुषाणां विचारान् पठितुं, सम्यग् आचरितुं च अवसरं लभते । प्राचीनकाले छात्रजीवनं ब्रह्मचर्यम् उच्यते स्म । ब्रह्मचारी तपोमयं जीवनं कठोर व्रतं च आचर्य सरलभावेन केवलं ज्ञानोपार्जने संलग्नोऽभवत् । अनेन तपसा ज्ञानेन च भाविजीवने सः कष्टानि सोढुं समर्थोऽभवत् ज्ञानस्य, विद्यायाः तपसः, दानादिधर्मस्य च विशिष्टं महत्त्वमस्ति मनुष्यजीवने, अन्यथा मनुष्यः पशुतुल्यो भवति । उक्तं हि–
येषां न विद्या न तपो न दानं ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः । ते मृत्युलोके भुवि भारभूता मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति ।

अतएव छात्रैः अस्य सुवर्णावसरस्य सदुपयोगः कर्तव्यो न च नाशयितव्यः कालः । यद्यस्मिन् काले छात्राः संयमेन, तपसा, परिश्रमेण नियमपूर्वक कार्यं कुर्वन्ति, सत्यमाचरन्ति, गुरूणामादरं कुर्वन्ति, आलस्यं च त्यजन्ति तदा सकले जीवने ते कदापि विफला न भविष्यन्ति। नायं कालः सुखमुपभोक्तुम् । केवलं सुखमिच्छता परिश्रमेण विना विद्या न लभ्यते सर्वविधो विकासश्च न भवति । अत एवोच्यते-

सुखार्थी वा त्यजेद्विद्यां विद्यार्थी वा त्यजेत् सुखम् ।
सुखार्थिनः कुतो विद्या विद्यार्थिनः कुतो सुखम् ॥

भाविजीवने सुखार्थमेव छात्रजीवने परिश्रमः क्रियते । छात्रैः नियमितं भोजनं भक्षणीयम्, नियतं च व्यायामेन शरीर पोषणीयम्, आलस्यं त्यक्त्वाऽध्ययनं कर्तव्यम् । तेन शोभनविचारमयानि पुस्तकानि पठितव्यानि, शोभनविचारमयानि नाटकानि चित्राणि च द्रष्टव्यानि, शोभनविचारमयानि गीतानि श्रोतव्यानि गातव्यानि च । अनेन चित्तशुद्धिर्भवति चित्तं च कार्यात् न विचलति ।

सत्य से धर्म और धर्म से सत्य भिन्न नहीं । इसलिये सत्य को प्राप्त करने के लिये सत्य से पृथक् नहीं होना चाहिये। किन्तु उसे पूर्ण रीति से प्राप्त कर लेना चाहिये ॥इसलिये उपनिषद् ने इस मन्त्र में चेतावनी दी है कि ऐसी महत्त्वपूर्ण वस्तु अर्थात् सत्य आवरण रहित ही रहनी चाहिये और इसलिये मनुष्य का कर्त्तव्य है कि उस पर सुवर्णमय पात्रों अर्थात् प्रलोभनों का आवरण न पड़ने दें । तभी वह अपने कर्त्तव्यों के पालन करने और उद्देश्य को प्राप्त कर लेने में सफल हो सकता है । कर्त्तव्य विधान के बाद उसकी पूर्ति के लिये ईश्वर से प्रार्थना की गई है । इस मन्त्र के सत्य पर बल देने महत्व को देखते हुए केन्द्रिय विद्यालय संगठन द्वारा इस मन्त्र के एक अंश "तत् त्वं पूषन् अपावृणु" को अपने ध्येयवाक्य या आदर्शवाक्य के रूप में स्वीकृत किया गया है।

जननी-जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

मातृभूमिं अयोध्यामभिलक्ष्य प्रभुरामचन्द्रः स्वर्णमयीं लंकामपि निराकरोति, लक्ष्मणं कथयति च हे लक्ष्मण! मह्यं स्वर्णमयी लंङ्का अपि न रोचते। जननी जन्मभिश्च स्वर्गादपि गरीयसी। जननी पुत्रं जनयति, महता कष्टेन तस्य पालन करोति, तं साक्षरं करोति, सुसंस्कारान् ददाति च। जन्मभूमिरपि जनान् धारयति, शस्यादिभिः पालयति, पोषयति च। मातुः समीपे बालः स्वर्गादपि अधिकं सुखम् अनुभवति, अतः माता स्वर्गादपि श्रेष्ठा अस्ति। जन्मभूमिः अस्माकं मातृभूमिरस्ति। बालकं प्रति मातुः स्वाभाविकं, निरपेक्षं च प्रेम भवति, न तादृशं क्वापि दृश्यते। सा सदैव बालकस्य कल्याणं, सुखं च चिन्तयति। पुत्रस्य, पुत्र्याः वा जननीं प्रति प्रेम नैसर्गिकम् अस्ति। मातुः ऋणभारावतारणं कदापि न शक्यम्। अतः उपनिषत्सु कथितम् 'मातृदेवो भव'। जन्मभूमिरपि अस्मान् रक्षति। सा अस्माकं पालनं अन्नेन, जलेन, फलादिभिश्च करोति। अस्यां पृथिव्याम् एव वयं गृहाणि निर्माय सुखेनैव वसामः। अतः जन्मभूमिः मातुरपि अधिकम् उपकरोति। माता तु कानिचित् वर्षाणि एव बालक पालयति परन्तु मातृभूमिः आजीवनम् अस्माकं रक्षणं करोति। अतः सा स्वर्गादपि गरीयसी, नास्त्यत्र कोऽपि विसंवादः।

भारतभूमिः अस्माकं मातृभूमिः। अस्याः रक्षणे वयम् अहर्निशं प्रयतामहे। इयम् अस्माभिः पूजनीया खलु। विदेशान् गताः जनाः अपि स्वमातृभूमिं भारतभूमिं न विस्मरन्ति। मातृभूमेः हेतोः कृतानां बलिदानानां कथाः वयं सदैव स्मरामः। वयमपि मातृभूमेः उन्नत्यर्थं तत्पराः भवेम। तर्हि वयं तस्याः ऋणात् मुक्ताः भवितुं शक्नुमः।

चेतन
कक्षा नवमी

प्रदूषणम्

विश्वस्य एका भयावहा समस्या अस्ति 'प्रदूषणम्'। प्रदूषणनिवारणाय वृक्षारोपणम् अत्यावश्यकम् अस्ति। वृक्षाः स्वयं कुसुम-पत्र-फलानां भारं वहन्ति तथा सर्वं अन्येभ्यः गच्छन्ति। स्वयम् आतपे तिष्ठन्ति, अन्यस्य छायां कुर्वन्ति। वृक्षाणां मूलं, वल्कलं, पत्रं, पुष्पं, फलं सर्वमेव परेभ्यः अस्ति।

एतादृशाः परोपकारिणः वृक्षाः जनेभ्यः किमपि न वाञ्छन्ति। किन्तु आधुनिके युगे जनाः स्वार्थिनः अभवत्। स्वसुखाय, गृहनिर्माणाय ते वृक्षान् छिन्दन्ति। ते किं न जानन्ति यत् वृक्षाः सृष्टेः आधाराः सन्ति। वृक्षाभावे सृष्टिः असंभवा खलु।

वृक्षाः जनानां शरीरस्वास्थ्याय अपि सन्ति। ते 'कार्बन डायऑक्साइड' वायुं गृहणन्ति, ऑक्सीजनवायुं च विसृजन्ति। नूनम् एषां जीवनं समस्तप्राणिभ्यः उपयोगिनम् अस्ति। येभ्यः अर्थिनः कदापि निराशां न यान्ति। एवं परोपकारिणां वृक्षाणां छेदनं कदापि न कर्तव्यम्। अस्माकं संस्कृत्यां वृक्षभेदनं पापं मन्यते।

अतः प्रत्येक-नागरिकस्य एतत् कर्त्तव्यं यत् तेन वृक्षारोपणम् अवश्यं कर्तव्यम्। अधुना विद्यालयेषु अपि वृक्षारोपणं क्रियते। शासनः अपि अस्यां दिशायां प्रयासं करोति । यदि वृक्षारोपणस्य कार्यं निरन्तरं भवेत्। तर्हि प्रदूषण-समस्यायाः समाधानं भवेत्।

कु. अक्षरा
दशमी कक्षा

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः

संसाररथस्य द्वे चक्रे स्तः। नरः च नारी च। उभयोः अपि समानं महत्त्वम्। नारीं विना नरः संसाररथं चालयितुं न समर्थः। नरं विना नारी अपूर्णा तथा नारीं विना नरोऽपि अपूर्णः।

प्राचीनकाले स्त्रीणां महत्त्वम् अधिकम् आसीत्। वैदिककाले तासां स्थानं गौरवपूर्णम् आसीत्। नारी 'देवी' रूपेण सर्वैः मानिता। न केवलं प्राचीनकाले, आधुनिकाले अपि नारीणां सम्मानं सर्वेषां कर्त्तव्यम्। यस्मिन् देशे नारीणां सम्मानं भवति, सः देशः उन्नतिं गच्छति। यत्र तासाम् आदरः क्रियते तत्र सुखं शान्तिः च भवति। अतः उक्तम्-

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः॥

परिवारे गृहिण्याः स्थानं सर्वोच्चम् अस्ति। सा एव परिवारस्य सर्वेषां सदस्यानां चिन्तां करोति। सा अर्थ-अर्जनमपि करोति, गृहकार्यम् अपि करोति। नारी पत्नीरूपेण,मातारूपेण, भगिनीरूपेण सर्वेषां कर्तव्यानां पालनं करोति। यस्मिन् गृहे नारी न भवति, तद्गृहं गृहं न भासते। नारी एव स्वकष्टान् विस्मृत्य सर्वेषां सुखाय अहर्निशं प्रयतते। नारी त्यागस्य मूर्तिः अस्ति।

यथा नारी स्वपरिवारस्य हितं वाञ्छति तथा समाजस्य अपि विकासं कल्याणम् इच्छति। अधुना सा बहुविधेषु क्षेत्रेषु अग्रेसरा अस्ति। सामाजिककार्येषु तस्याः अधिकारः सर्वैः स्वीकृतः। देशस्य, समाजस्य उन्नत्यै स्त्रीसम्मानम् अपेक्षणीयम्। सर्वैः नारीणाम् आदरः करणीयः। अस्माकं देशे तु नारीणां स्वरूप मातृपदेन गौरवान्वितम्। नारी एव समर्थपुरुषस्य जननी अस्ति। आधुनिके काले 'न स्त्री स्वातंत्र्यम् अर्हति' एतादृशं वाक्यं न उचितम्। अपि तु आधुनीकि नारी विचार-स्वातंत्र्यं भाषणस्वातन्त्र्यम् अपि अर्हति। नारीं विना अयं समाजःअपूर्णः अस्ति, अत एव नारी सम्मानः आवश्यकः।

वर्षा ऋतुः

ऋतुषु तृतीयः ऋतुः वर्षा.ऋतुः भवति। ग्रीष्मानन्तरं वर्षा.ऋतुः आगच्छति। वर्षा-ऋतौ अधिकतया वृष्टिः भवति। अत एव अयं ऋतुः वर्षा-ऋतुः कथ्यते। वर्षा-ऋतौ प्रायेण सर्वत्र वृष्टिः भवति। आकाशमण्डलं निरन्तरं मेघैः आच्छन्नं तिष्ठति। प्रायशः जलबिन्दवः पतन्ति।

वर्षा-ऋतौ दृश्यम् अतीव रमणीयं भवति। वनेषु उपवनेषु, वाटिकासु, वृक्षेषु च सर्वत्र हरीतिमा दृष्टिगोचरीभवति। वर्षा-ऋतौ प्रकृतिनटी विविधानि रूपाणि धारयति। कदाचित् मेघाः गर्जन्ति। कदाचित् विद्युतः विस्फुरन्ति। कदाचित् झंझावातः वाति। कदाचित् प्रकाशः भवति। कदाचित् अन्धकारः भवति। कदाचित् च इंद्रधनुषः प्रकाशते।

वर्षा-ऋतौ सर्वेषां महान् आनन्दः भवति। वनेषु मयूरः नृत्यन्ति। जलाशयेषु मण्डूकः रटन्ति। वृक्षेषु चातकाः कूजन्ति तथा वीथिषु बालकाः खेलन्ति। वर्षाणां समयः कृष्यै अपि बहु लाभदायकः भवति। अस्मिन् समये कृषकाः भूमिं कर्षन्ति। क्षेत्रेषु बीजानि वपन्ति।

धन्यवादः।

आशीष यादव
कक्षा अष्टमी

वसुधैव कुटुम्बकम्

अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम्। उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।

अस्मिन् जगति जनाः द्विविधाः सन्ति। येषां चेतः विशालं भवति ते कोऽपि भेदः न मानयन्ति। किन्तु लघुचेतमानवाः भेदभावं कुर्वन्ति। यदि वयं सर्वे एकस्य परमात्मानः पुत्राः तर्हि भेदभावस्य किं कारणम्? इदं मम् इदं परस्य इति भावना एवं दुःखाय, क्लेशाय भवति। सर्वेषां हृदये यदि एकत्व भावना स्यात् तर्हि सर्वे परस्परं स्नेहेन वसन्ति। यदि मनुष्यहृदये स्वार्थभावना भवति तर्हि सः श्रेष्ठकार्यं कर्तुं कदापि न शक्नोति। ये स्वार्थं परित्यज्य परोपकाराय स्वजीवनं यापयन्ति तेषां जीवनं सफलं भवति।

विश्वकल्याणभावनया मानवः गौरवं लभते। वसुधैव कुटुम्बकम् इति भावनाम् आश्रित्य स्वकीयं जीवनं सफलं करणीयम्।

सर्वकल्याणभावना, सर्वहितकामना स्यात्। सुभाषितेषु अपि कथिता यत् -

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभाग्भवेत्।।

अत एव उच्यते गौरवाय सम्मानाय च स्वार्थभावना त्याज्या तथा वसुधैव कुटुम्बकम् इयं भावना स्वीकरणीया।

देवी चातुर्या
नवमी कक्षा

शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्

एतत् कथ्यते यत् शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्। स्वस्थशरीरेण एव कर्तव्यपालनं कर्तुं प्रभवति नरः। स्वस्थशरीरं प्राप्तुम् अनेकानि साधनानि सन्ति। तेषु व्यायामः महत्वपूर्णण् साधनम् अस्ति। स्वास्थ्यरक्षायै व्यायामः अतीव आवश्यकः अस्ति। व्यायामस्य अनेके लाभाः सन्ति। अनेन बलं वर्धते, शरीरस्य सर्वेषाम् अङ्गानां विकासः भवति तथा शरीरे रुधिरसंचारः सम्यक् भवति। प्रातःकाले वायुः प्रदूषणरहितः भवति। प्रातःकाले वातावरणम् अपि उत्साहवर्धकं भवति। अतः प्रातःकाले एव व्यायामः करणीयः। नियमितव्यायामेन शरीरे रोगाः न उद्भवन्ति।

स्वस्थशरीरेण मानवः कार्यकुशलः भवति। रुग्णः मानवः किमपि कर्तुं न प्रभवति। धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष एते चत्वारः पुरुषार्थाः सन्ति। तेषां प्राप्तुं स्वस्थशरीरम् आवश्यकम्। स्वस्थे शरीरे एव स्वस्थ-आत्मा निवसति इति मन्यते। आरोग्यशालीनां जीवनम् आनन्ददायकं भवति। ये जनाः दीर्घजीवनं, स्वस्थजीवनं वाञ्छन्ति, तैः व्यायामः अवश्यः करणीयः।

कार्तिक गौड़
कक्षा नवमी

सदाचारः

सज्जनाः यानि यानि सत्कार्याणि कुर्वन्ति, सः सदाचार उच्यते। सदाचारी नरः कीर्तिं भूतिं च लभते। प्रातःकाले उत्थाय मातापितरौ, वृद्धान् गुरून् च प्रणमेत्। तेषाम् आज्ञां पालयेत् तान् सेवेत च। सदाचारिणः जनः सर्वेषां प्राणीनाम् उपकारं करोति। सदाचारेण मानवजीवनस्य सर्वविधा उन्नतिः भवति। अतएव सदाचारः उन्नत्याः द्वारम् अस्ति। सदाचारेणैव जनाः हितं मधुरं च वदन्ति। सदाचारयुक्तः जनः सर्वत्र आदरं लभते। सदाचारेण हीनः जनः सर्वत्र पशुतुल्यः भवति। सदाचारपालनेन एव श्रीरामः मर्यादापुरुषोत्तमः अभवत्। सदाचारेणैव महर्षिः दधीचिः यशःशरीरेण अद्यापि जीवितः। सदाचारस्य महिमानं वर्णयितुं कः अपि न शक्नोति। अतः अस्माभिः सर्वतोभावेन सदाचारः पालनीयः। उक्तमपि –

वृत्तं यत्नेन संरक्षेत् वित्तम् एति च याति च।
अक्षीणो वित्ततः क्षीणो वृत्तस्तु हतो हतः॥

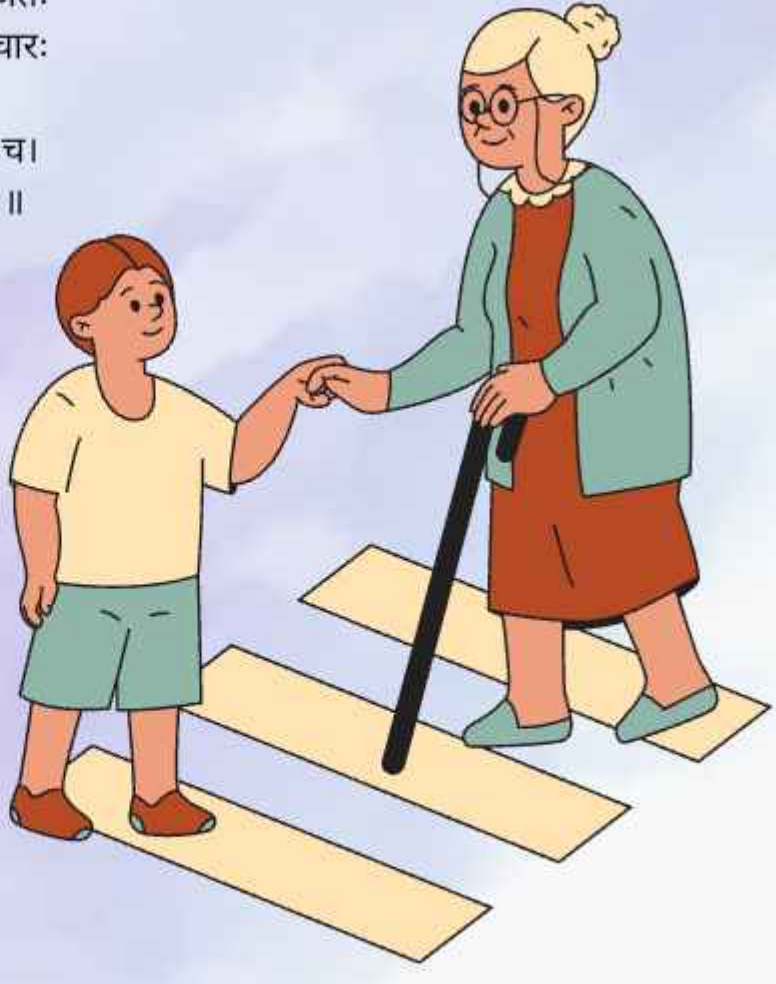

कु. वीणा
कक्षा नवमी

समयस्य सदुपयोगः

समयस्य समुचिते रूपे उपयोगः एव समयस्य सदुपयोगः कथ्यते। समयस्य सदुपयोगः मानवसमाजस्य हितसाधकेषु साधनेषु साधनं वर्तते।संसारे बहूनि वस्तूनि बहुमूल्यानि सन्ति परं तेषु सर्वापेक्षया बहुमूल्य वस्तु समयः एव वर्तते। यतः अन्यानि वस्तूनि विनष्टानि अपि पुनः लब्धुं शक्यन्ते परन्तु व्यतीतः समयः केनापि उपायेन पुनः लब्धुं न शक्यते। विद्या विनष्टा पुनः अभ्यासेन लब्धुं शक्यते, धनं विनष्टं पुनः उपार्जनेन लब्धुं शक्यते, यशः विनष्टं पुनः सत्कर्मणा उपार्जयितुं शक्यते परं विनष्टः समयः सहस्त्रैअपि प्रयत्नैः दुर्लभः एव।अतएव समयः सर्वाधिकं बहुमूल्यं वस्तु मन्यते।

अस्माकं भारतीयानां कृते अयं राष्ट्रनिर्माणस्य कालः वर्तते। अस्माकं स्कन्धेषु राष्ट्रनिर्माणस्य महान् भारः वर्तते। अस्मिन् समये तु विशेषरूपेण अस्माभिः समयस्य सदुपयोगे ध्यानं दातव्यं येन शीघ्रतया राष्ट्रस्य समुन्नतिः स्यात्। अस्मिन् विषये छात्रैः विशेषरूपेण ध्यानं देयम्। यतः ते एव भारतस्य भाविनः कर्णधाराः तथा भाग्यविधातारः सन्ति।

सत्यजीतः
कक्षा अष्टमी

वसन्त-ऋतुः

भारतवर्षे षड् ऋतवः भवन्ति। तेषां वसन्तः प्रथमः अस्ति। चैत्रवैशाखयोः वसन्तः ऋतुः भवति। वसन्तः रमणीयः ऋतुः अस्ति। एतस्मिन् समये न अति उष्मा भवति न वा अति शीतलता। वसन्तकाले सुखदायकः अनिलः प्रवहति। वृक्षेषु लतासु सुन्दराणि विविधवर्णानि कुसुमानि शोभन्ते। पलाशपुष्पैः वनस्थली आरक्ता जायते। अस्मिन् काले क्षेत्राणि सस्यपूर्णानि दृश्यन्ते। कृषकाः प्रसन्नाः भवन्ति। कोकिलाः मधुरं गायन्ति। आम्रवृक्षेषु मञ्जर्यः विकसन्ति। मञ्जरीभ्यः मधुः स्रवति। वसन्तः ऋतुः सर्वेषु प्राणिषु नवचेतनायाः संचारं करोति। वसन्तकाले वायुः स्वास्थ्यवर्धकः, प्रकृतिशोभा मनोरागिणी, वनानि च सौरभैः परिपूतानि भवन्ति। एवं वसन्तकालः आनन्द-उत्सवस्य कालः भवति।

Article	Page no.
Mathematics and its importance - Hemant kumar	34
Let's go to school - Prayag Motghare	35
Because your wings are still intact - Sreeja Mothikar	36
Career in fine art - Amit Verma	37
Good heart and Great mind - Bam Rahul	38
Exam stress management - Hemant Kumar	39-40
Fundamental duties - Indumathi	41
Shakespeare - Devi Chaturya	42
Ruskin Bond - Veena	43
Kiran Desai - Indumathi	44
Super sense of Tiger	45
Organ donation day - Sweta Padma Sahoo	46

English Section

$a+b=b+a$

$M=\left(\frac{x_1+x_2}{2}, \frac{y_1+y_2}{2}\right)$

$a+(b+c)=(a+b)+c$

Hemant kumar
T.G. T. Math

MATHEMATICS AND IT'S IMPORTANCE

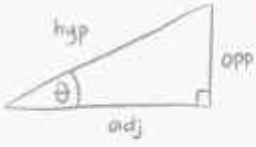

$\cos(\theta)=\frac{adj}{hyp}$

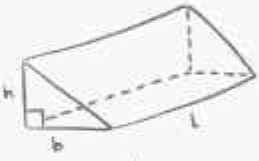

$V=\frac{1}{2}bhl$

It is said that Mathematics is the language of God. So if you want to reach to God , you have to learn mathematics.

Many of you are confused 🤔, why is it so ?

Don't worry, I'm explaining you.

Actually God has made this entire universe so beautiful and systematic , so God must be a great Mathematician and that's why it is said that Mathematics is the way to reach God.

$A=\frac{\sqrt{3}}{4}a^2$

$A=\pi r^2$

Every subject that we study has it's own importance. They all are equally valuable as Mathematics is , but all the subjects looks incomplete without mathematics. Other subjects didn't express themselves comfortably without mathematics. You can think of any subject, they are somehow related with Mathematics , whether it is science, social science , economics, polity anything. So we can say that Mathematics is that soil in which every subject grows and find it's existence.

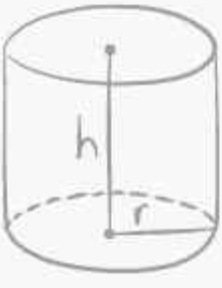

$V=\pi r^2 h$

$A=\frac{1}{2}bh$

Today, mathematics is used throughout the world as an essential tool in mant fields including natural science, engineering, medical sciences and social science. Applied mathematics, the branch of mathematics concerned with application of mathematical knowledge to other fields, inspires and makes use of new mathematical discoveries and sometimes leads to the development of entirely new disciplines.

$V=\frac{4}{3}\pi r^3$

$d=\sqrt{(x_2-x_1)^2+(y_2-y_1)^2}$

$\frac{x}{a}+\frac{y}{b}=1$

$ax^2+bx+c=0$

$x=\frac{-b\pm\sqrt{b^2-4ac}}{2a}$

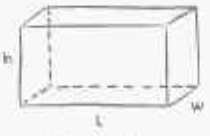

$V=lwh$

$C=2\pi r$

Prayag Motghare
P.R.T.

LET'S GO TO SCHOOL

Let's go to school, children
Let's go to school and learn.

School is the best place of education
Education is the knowledge of the ignorant,
This is given by the school and is fun,
So, let's go to school and learn.

Some among you may become a doctor,
And some like Babasaheb Ambedkar,
By persuading this knowledge of education,
So, let's go to school and learn.

Says Prayag, let's all take the education,
Move this country forward for a better nation,
With the Bane Sakhar Bharat campaign,
So, let's go to school and learn.

Let's go to school, children
Let's go to school and learn.

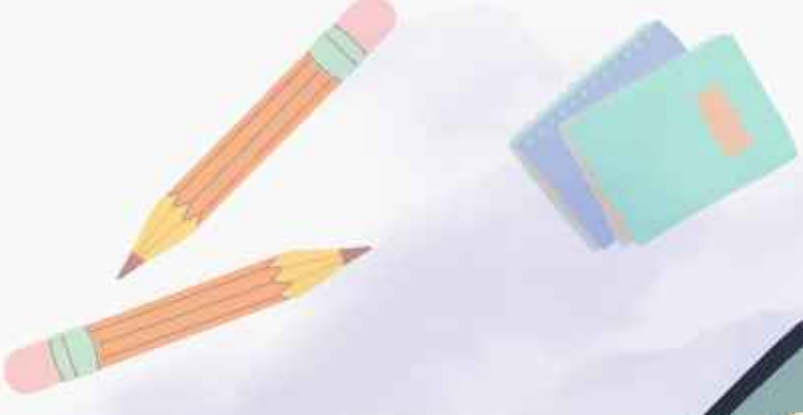

Sreeja Mothikar
P.R.T.

BECAUSE YOU'RE WINGS ARE STILL INTACT

If u think u are a
falling sun losing all its
might,
Remember my dear!
You can also be the
one whom trillions of
stars are waiting for..

If u think u are a small
river, narrow and
shallow,
Remember my dear!
U are the one whom
the arms of huge sun
n oceans are waiting
for..

If u think u are just a
rock before a huge
mountain,
Remember my dear!
U can be the deity
whom millions of
devotees are waiting
for..

If u feel urself as just a
plain white sheet,
Remember my dear!
U are the mixture of all
the colours of
rainbow..

When u can be
nothing, u can be
everything..
Coz, you may loose
your shadow when u
are in dark but,
Remember my dear,
the wings of your
dreams are still intact..

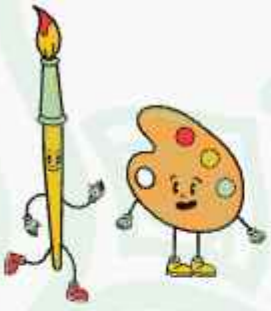

Amit verma
T.G.T. Art Education

CAREER IN FINE ARTS

A career in fine art can be fulfilling and diverse, offering opportunities for creative expression and personal growth. Here are some potential career paths within the field of fine art:

1. **Visual Artist-** As a visual artist, you can create paintings, sculptures, drawings, prints, or mixed media artworks. This career path allows for a high level of creativity and self-expression, and artists often exhibit their work in galleries, museums, or other art venues.

2. **Art Teacher/Instructor-** If you have a passion for sharing your artistic skills and knowledge, you could pursue a career as an art teacher or instructor. This could involve teaching at schools, community centers, workshops, or even offering private lessons.

3. **Gallery/Museum Curator-** Curators are responsible for selecting and organizing artworks for exhibitions in galleries and museums. This career path requires a deep understanding of art history, as well as strong organizational and communication skills.

4. **Art Director/Designer-** Art directors and designers work in various industries, such as advertising, publishing, fashion, or film, to create visual concepts and designs. They may oversee the visual aspects of projects, including layout, typography, and overall aesthetic.

5. **Illustrator/Graphic Designer-** Illustrators and graphic designers use their artistic skills to create visual concepts for a wide range of projects, including books, magazines, advertisements, websites, and more. This career path requires proficiency in digital design tools and software.

6. **Art Therapist-** Art therapists use art-making as a form of therapy to help individuals explore their emotions, improve self-esteem, and address psychological issues. This career path requires specialized training in both art and psychology.

7. **Freelance Artist-** Many fine artists choose to work as freelancers, selling their artwork directly to collectors, clients, or through online platforms. This offers flexibility and independence, but requires strong self-promotion and business skills.

Regardless of the specific career path you choose, a career in fine art requires dedication, passion, and perseverance. Building a successful career may take time and effort, but for many artists, the opportunity to pursue their creative passions is well worth it.

Bam Rahul
P.R.T.

GOOD HEART AND GREAT MIND

Handling 40 different children at a time, in classroom, is not an easy task, but being a teacher we enjoy it.

1. In the morning assembly, children assemble themselves and carries out all the events and they return to their classrooms. This shows their discipline.
2. During the class hours, children listen to what we are teaching and discuss with the teacher for clarification of doubts. It shows their interest in learning and understanding.
3. They approach us to share their thoughts, views, interests, issues etc., which shows their trust in us.
4. During the lunch, children sit in groups and enjoy their food, which shows their social relations with the fellow beings.
5. After the school hours we hear many "bye"
from children which shows their happiness they gathered all the day in school.

.....We really appreciate the children for their good hearts and great minds.

Yes, we are teachers....
The words we speak, reach the little hearts.....
The activities we provide, improve their skills.....
The rules we follow, make the rulers of the future....
The homework that the children do, the worthy they become....
The blessings from our deep hearts are the backbone for their bright future.....

Hemant kumar
T.G. T. Math

Exam Stress Management: Strategies to Navigate Academic Pressure

Exams are a common source of stress for students worldwide. The pressure to perform well can often feel overwhelming, leading to anxiety, lack of focus, and even physical symptoms like headaches or insomnia. However, with the right strategies in place, it's possible to manage exam stress effectively and achieve success without sacrificing your well-being.

Understanding Exam Stress

Before diving into strategies for managing exam stress, it's essential to understand its underlying causes. Exam stress typically stems from a combination of factors, including:

1. High Expectations: Students may feel pressure to meet their own expectations or those of their parents, teachers, or peers.
2. Fear of Failure: The prospect of failing an exam can trigger intense anxiety and self-doubt.
3. Time Constraints: Limited time to study and prepare adequately can exacerbate stress levels.
4. Perceived Importance: The significance placed on exam results for future opportunities, such as college admissions or career prospects, can amplify stress.

Effective Stress Management Strategies

While it's natural to feel stressed before exams, there are several strategies you can employ to mitigate its effects and perform your best:

1. Plan and Organize: Create a study schedule that allows ample time for review and breaks. Break down your study material into manageable chunks, focusing on one topic at a time. Planning ahead can help reduce last-minute cramming and feelings of overwhelm.

2. Practice Self-Care: Prioritize your physical and mental well-being by getting enough sleep, eating nutritious meals, and engaging in regular exercise. Taking care of your body can improve concentration, memory, and overall resilience to stress.

3. Utilize Relaxation Techniques: Incorporate relaxation techniques such as deep breathing, meditation, or progressive muscle relaxation into your daily routine. These practices can help calm your mind and alleviate tension, making it easier to focus during study sessions and exams.

4. Stay Positive Maintain a positive mindset by reframing negative thoughts and focusing on your strengths and past successes. Visualize yourself succeeding in your exams and remind yourself that temporary setbacks are a natural part of the learning process.

5. Seek Support: Don't hesitate to reach out to friends, family, or teachers for support when feeling overwhelmed. Talking about your feelings with someone you trust can provide perspective and encouragement.

6. Practice Mindfulness: Stay present in the moment by practicing mindfulness techniques such as mindfulness meditation or mindful walking. Being mindful can help reduce anxiety about the future and improve your ability to concentrate on the task at hand.

7. Take Breaks: Avoid burnout by taking regular breaks during study sessions. Short breaks can help prevent mental fatigue and improve productivity when you return to your studies.

8. Maintain Perspective: Remember that exams are just one aspect of your academic journey and do not define your worth or potential. Keep things in perspective and focus on doing your best rather than achieving perfection.

Conclusion

While exam stress is a common experience for students, it's essential to develop healthy coping mechanisms to manage it effectively. By implementing strategies such as planning and organization, self-care, relaxation techniques, and seeking support, you can navigate exam season with greater ease and confidence. Remember to prioritize your well-being and maintain perspective throughout the process, knowing that your best effort is always enough.

Fundamental Duties

It shall be the duty of every citizen of India-

- to abide by the constitution and respect its ideals & institutions, the National Flag and the National Anthem;
- to cherish and follow the noble ideals which inspired our national struggle for freedom;
- to uphold and protect the sovereignty, unity and integrity of India;
- to defend the country and render national service when called upon to do so;
- to promote harmony and the spirit of common brotherhood amongst all the people of India transcending religious, linguistic and regional or sectional diversities; to renounce practices derogatory to the dignity of women;
- to value & preserve the rich heritage of our composite culture;
- to protect and improve the natural environment including forests, lakes, rivers, wildlife and to have compassion for living creatures;
- to develop the scientific temper, humanism & the spirit of inquiry and reform;
- to safeguard public property & to abjure violence;
- to strive towards excellence in all spheres of individual and collective activity so that the nation constantly rises to higher levels of endeavour & achievement;

T. INDUMATHI

Shakespeare

William Shakespeare :- A legendary name in the English literature is william shakespeare

He was born to mary shakespeare and john shakespeare

In the year 1564 . the eldest son of john Shakespeare -
Since there is documentary proof of shakespeare being baptized on 26th april of . therefore scholars estimate him to be born three days prior as per the traditions of baptism at that time .
Between about 1590 and 1613 Shakespeare wrote at least 37 plays and collaborated on several more his 17 comedies include the merchant of venice and much ado about nothing .
His most famous among his tragedies are . Hamlet , othello ect

Most Famous Four

* Hamlet - 1879
* The tempest - 1807
* Romeo and juliet - 1597
* A midsummer Nights Dream 1602
* Shakespeare's Sonnets - 1609
* Sonnet 116 - 1609
* Sonnet 130 - 1609
* venus and adonis - 1593

Devi Chaudh...

Ruskin Bond

Ruskin bond was born on 19 may 1934 he is an indian authour his first novel, the Room on the roof, was published in 1956 and it received the John Llewellyn Rhys prize in 1957. Bond has authored more than 500 short stories, essays and novels which includes 69 books for children. He was awarded the Sahitya akademi award in 1998 for our trees still grow in dehra. he was awarded the Padma Sri in 1999 and Padma Bhushan in 2014. He lives with his adopted family in Landour, Mussorie, in the indian state of uttaraKhand. Most of his works are influenced by life in the hill stations at the foothills of the Himalayas, where he spent his childhood. the room on the roof, was written when he was 16 and published when he was 21. it was partly based on his experiences at dehradun. in his small rented room on the roof and his friends....

Name: veena
class: IX

KiranDesai

Kiran Desai was born on September 3 1971, New delhi, India. She lived in Delhi until she was 14, then spent a year in England, before her family moved to USA. She completed her schooling in Massachusetts before attending Bennington College; Hollins University & Columbia University, where she studied creative writing. In 1997 when she was published in the New Yorker & in Mirror-work, an abthology of 50 years of Indian writing edited by Salman Rushdie. In 1998, Hullabaloo in the Guava Orchard, which had taken four years to write, was publishet to good reviews. Eight years Later, The inheritance of Loss was published in early 2006, & won the 2006 Booker Prize. Kiran Desai - daughter of the novelist Anita Desai. Indian born American author whose second novel, The inheritance of Loss (2006), became an international best seller.

T. Indumathi (IX)

Super Sense of Tiger

1. Tiger is a wild animal.
2. It lives in jungle or forest.
3. It is the natonal animal of India.
4. It has big and strong body.
5. It has four legs.
6. It has two eyes, two ears and a tail.
7. It is Orange in colour with black stri on body.
8. It has very sharp teeth and nails.
9. It has very strong claws.
10. It runs very fast.

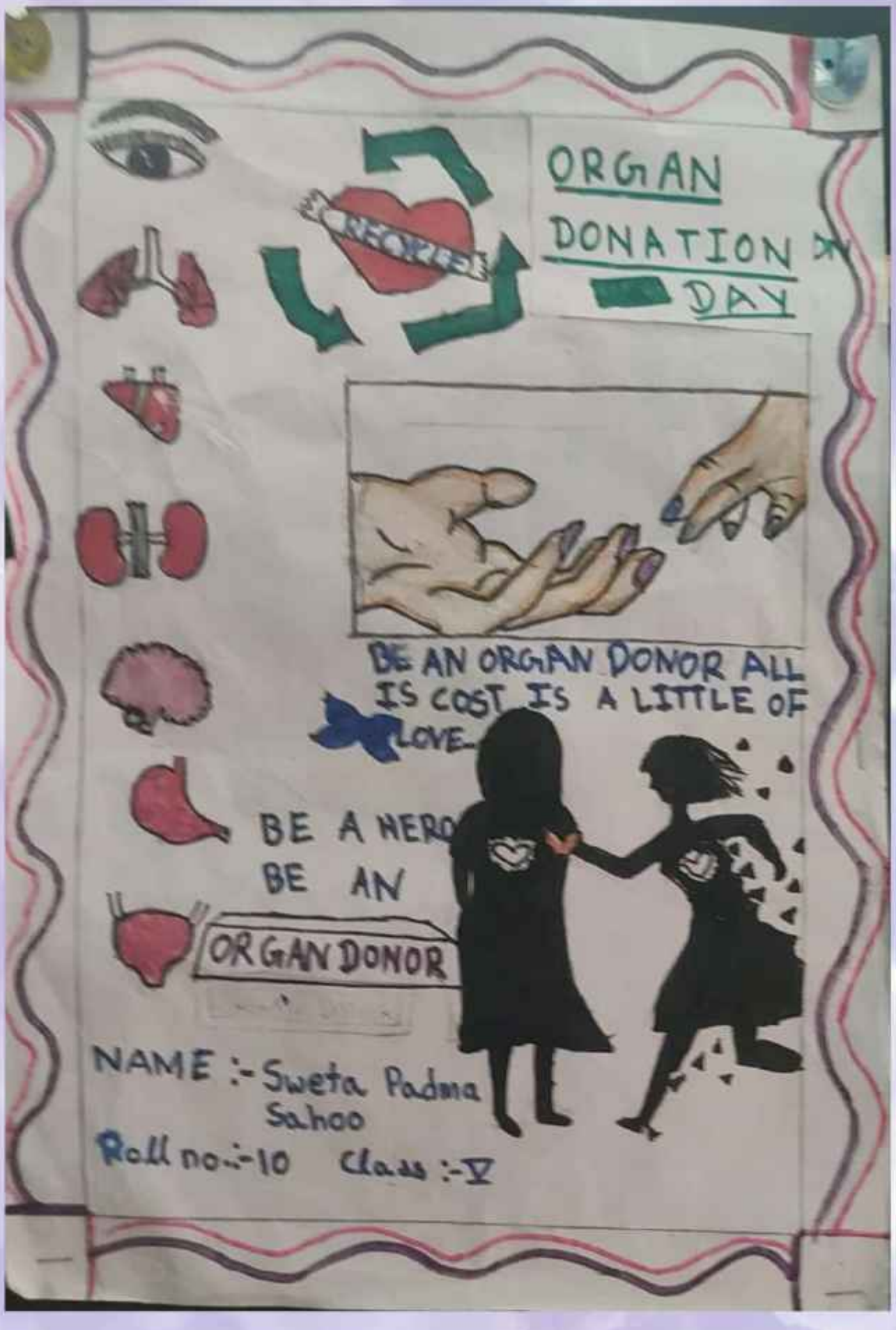
ORGAN
DONATION
DAY
BE AN ORGAN DONOR ALL
IS COST IS A LITTLE OF
LOVE.
BE A HERO
BE AN
ORGAN DONOR
NAME :- Sweta Padma
Sahoo
Roll no :-10 Class :-V

मेरा पुस्तकालय

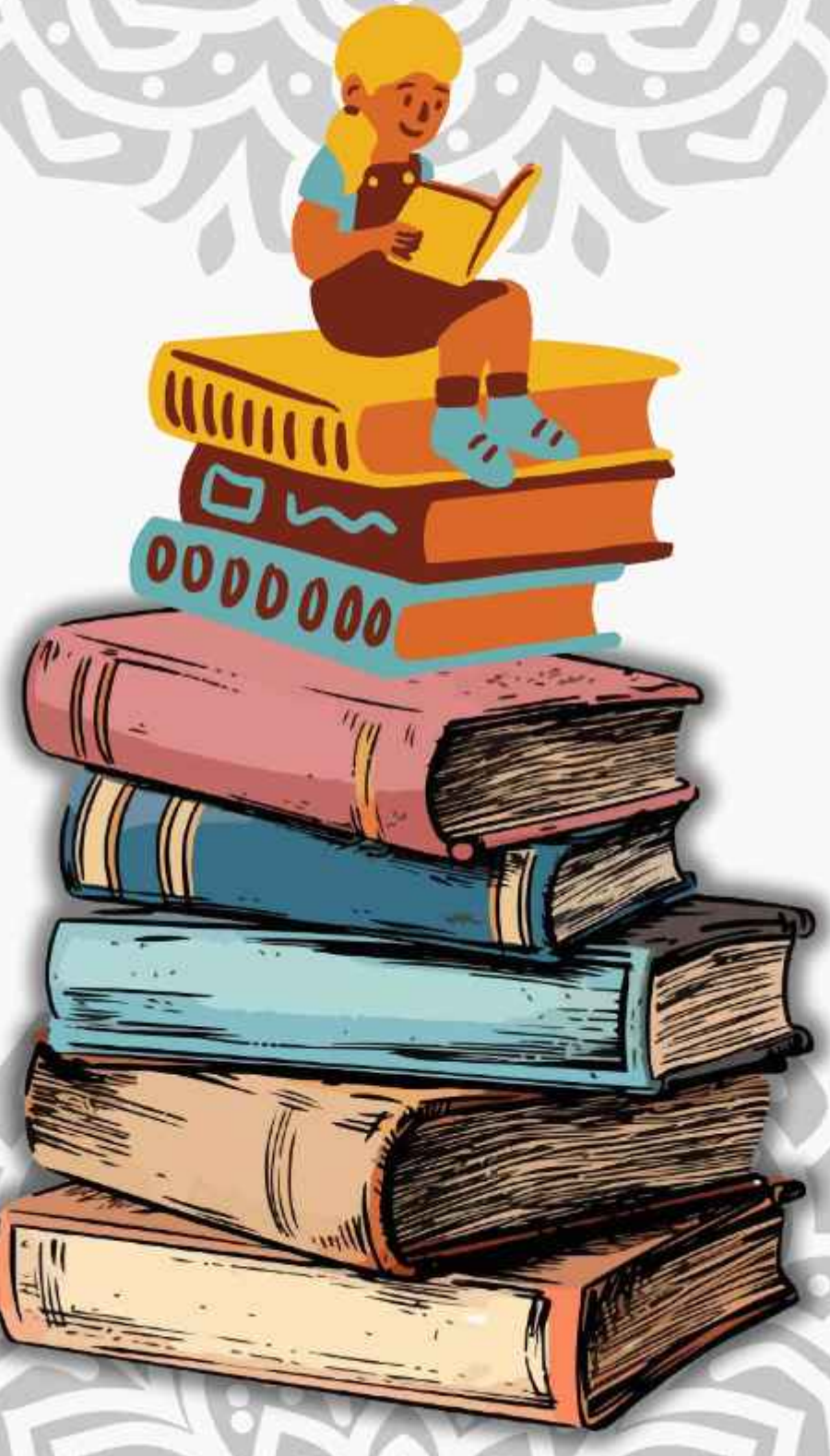

अमित वर्मा
टी. जी. टी. कला शिक्षा

पुस्तकालय की उपयोगिता

पुस्तकालय एक ऐसा स्थान है जो ज्ञान, शिक्षा, और साहित्य के अनमोल संसाधनों का भंडारण करता है। यह एक समृद्ध स्रोत है जो हर व्यक्ति को ज्ञान की खोज में सहायता प्रदान करता है। पुस्तकालय विभिन्न प्रकार की पुस्तकों, जॉर्नलों, अध्ययन सामग्रियों, और डेटाबेसेस को उपलब्ध कराता है जो विभिन्न विषयों और विचारों को समझने में मदद करते हैं।

पहला और महत्वपूर्ण कारण पुस्तकालय की उपयोगिता का है कि यह विद्यार्थियों और अन्य शोधकर्ताओं को एक स्थान प्रदान करता है जहाँ वे अध्ययन, अनुसंधान, और स्वयं शिक्षा कर सकते हैं। यह एक ऐसा स्थान है जहाँ विभिन्न विषयों पर विशेषज्ञता प्राप्त की जा सकती है और नवीनतम जानकारी को प्राप्त किया जा सकता है।

दूसरा कारण है कि पुस्तकालय विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करता है। यहाँ पर गतिविधियों, आवास, और सेमिनारों का आयोजन किया जाता है जो विचार विनिमय और सांस्कृतिक विकास को बढ़ावा देते हैं।

तीसरा कारण है कि पुस्तकालय सामाजिक समरसता और विविधता को बढ़ावा देता है। यहाँ विभिन्न जातियों, धर्मों, और आयु वर्गों के लोग एक साथ आते हैं और ज्ञान का अद्यापन करते हैं, जो समृद्धि और समाज में सहयोग को बढ़ाता है।

चौथा कारण है कि पुस्तकालय व्यक्तिगत विकास को बढ़ावा देता है। यह एक ऐसा स्थान है जहाँ लोग चिंतन कर सकते हैं, स्वयं को समझ सकते हैं, और अपनी रूचियों को प्रेरित कर सकते हैं। यहाँ पर विभिन्न विषयों पर किताबें और संदर्भ मात्रा में होती हैं जो व्यक्तिगत विकास को संजीवनी देती हैं।

इस प्रकार, पुस्तकालय एक महत्वपूर्ण संसाधन है जो समाज के सभी वर्गों के लिए महत्वपूर्ण है। यह एक स्थान है जो ज्ञान, विचार, और समृद्धि के साथ-साथ समाज में सामर्थ्य और समरसता को बढ़ावा देता है।

केंद्रीय विद्यालय आदिलाबाद/KENDRIYA VIDYALAY ADILABAD

LIBRARY MEDIA CENTRE

https://myvirtualkvlibrary.blogspot.com/

What Library Blog provides?

1. Information about school
2. NEP-2020, CCT, PISA, FLN, NIPUN etc
3. Library & Reader's Club activities
4. Govt of India Initiatives
5. Important Links
6. Student Corners
7. Tweets by KVS
8. News from NCERT, CBSE,KVS
9. e-Resources
10. OERs – Open Educational Resources
11. Split-up Syllabus
12. CCT Practices
13. Innovations and Experiments from Library
14. Virtual Museums
15. Flip books on Brave hearts
16. Links to digital libraries etc

What e-Library provides?

1. 24/7 Readings
2. Links to Free books sites
3. Digital Libraries – NDLI, Project Gutenberg, Internet Archive etc
4. Books in Hindi
5. Bharat ek Khoj
6. Rare Books Room
7. Indian Culture
8. NGeo Kids
9. Free and Open book sites
10. Books of the Day
11. Story waiver - Hindi
12. Story Line
13. Digital Readings
14. Kids books
15. Open Libraries
16. Dictionaries,Encyclopeadias
17. e-News papers
18. Online Magazines
19. Indian Book tuber
20. Story time from Space etc

https://mykvelibrary.blogspot.com/

ENTER TO READ.....EXIT TO SPREAD THE KNOWLEDGE

Mr. ASHOK ATUKAPURAM, LIBRARIAN

SONG ON READING

We love reading...

Let's start reading..... (2)

Open to read

Read to lead

(2).....Lead to serve the nation

We love reading...

Children books

Reference books

All the world is a book..... (2)

We love reading...

Books are friends

Books are life

(2).....Which make us feel so proud

We love reading...

Books are seeds

Which gives you life

And takes us to reach our dreams..... (2)

We love reading...

Books are lamps which spread the knowledge in the form of light and show the right way in the darkness, Motivates us, inspire us and makes our life so bright.

"We love reading.....Lets start reading"

ART EDUCATION

Tanishka - Class- 8th

Tanishka - Class- 8th

Keerthana - Class- 7th

Keerthana - Class- 7th

Kinjal - Class- 8th

Tanishka - Class- 8th

Anushka Meena - Class- 3rd

M. Aditya - Class- 9th

R. Hanishteja - Class- 1st

3 painting by - Madhushri - Class- 9th

Saumya - Class- 8th

Ashish yadav- Class- 8th

Manvika- Class- 2nd

Sannidhi - Class- 6th

K. Tarunya - Class- 3rd

Jaavlipriya - Class- 7th

Anushka patra - Class- 3rd

Swayam siddha Sahoo- Class- 3rd

Suhaana- Class- 6th

Sonakshi - Class- 4rh

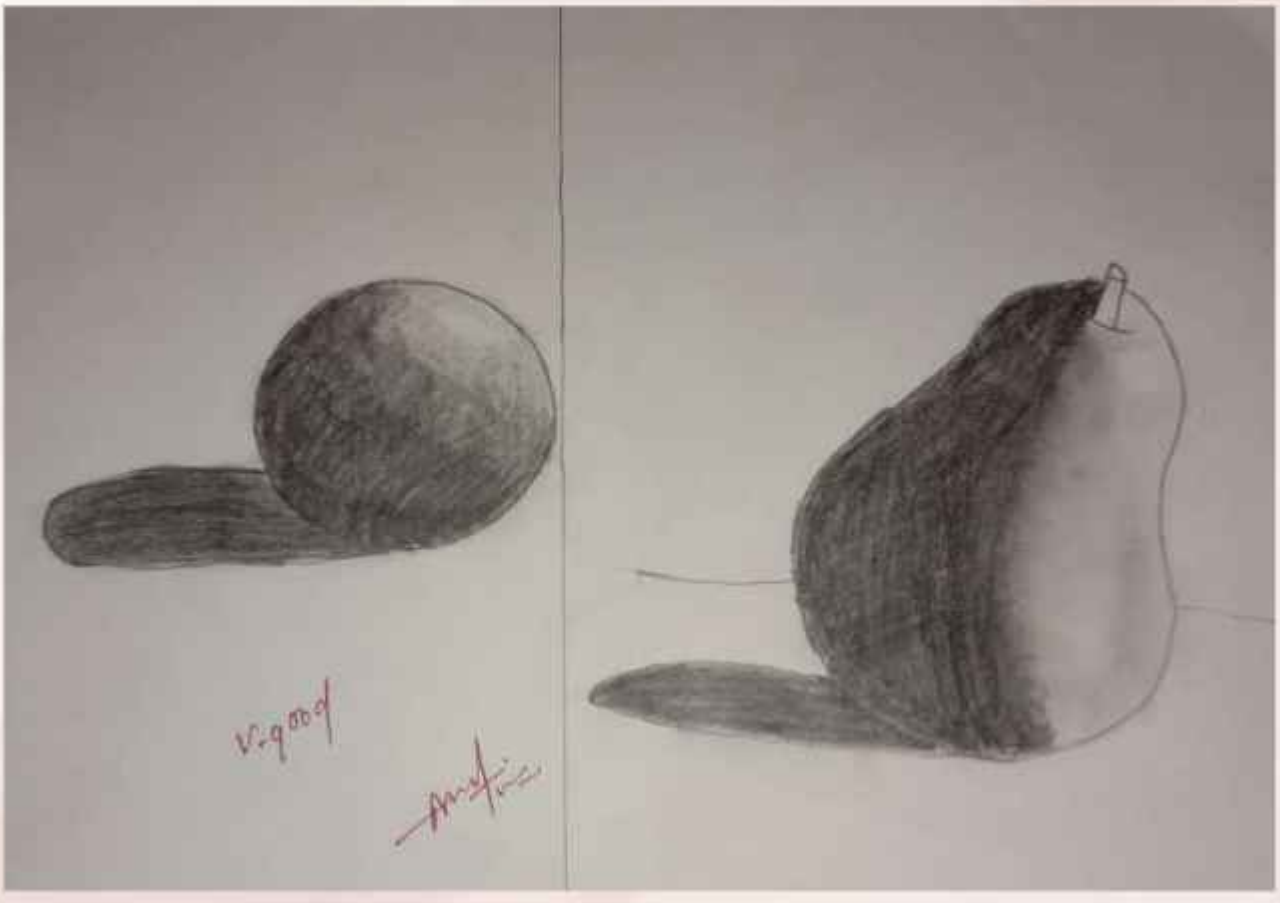

D. Supriya - Class- 7th

Gnaneshwari - Class- 8th

Gnaneshwari - Class- 8th

WORK EDUCATION

AUTOMATIC ERASER

Automatic Eraser project made by Ashwini Goli of 10th class which helps the teachers in their classes by reducing the work of erasing.
In the project a circular shaft is moved by pinion and rack with the help of a 12V, 5 RPM hight torque motor. The Direction of motor controlled by Double Pole Double throw Switch. DC power is taken by 230V/12 V Transformer(Converter)

In left side **Deepank Maske** student of 8th class Design a project in which Electric power generation is shown. He took one DC motor, DC generator , coupling materials and one electric bulb etc.

Motor is rotated by power of battery/ Cells which rotates generator and generator generates electric power.

And In right picture students of 6th class are learning connections of simple electric Circuits

In the picture, 6th Class students are learning the connections of simple electric circuits by using One Switch, one bulb holder, One incandescent Bulb and Electric wires.

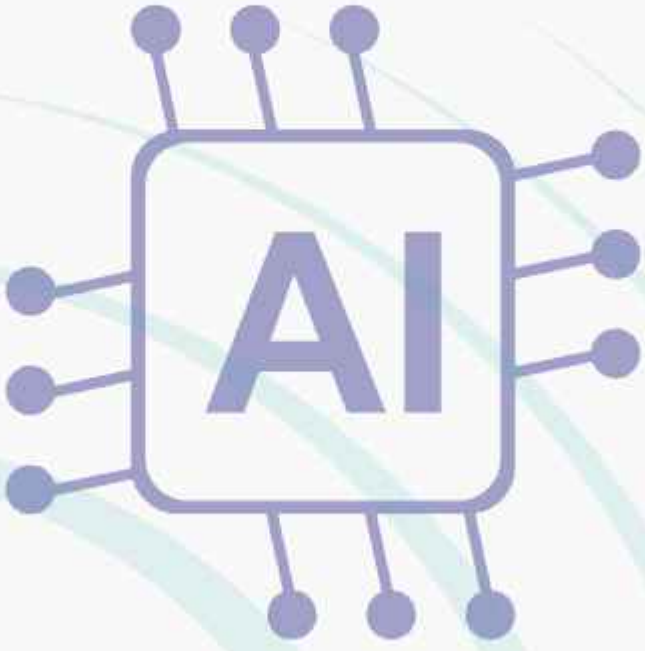

ARTIFICIAL INTELLIGENCE

Empowering Elders: The Innovative Project of Shlok Class X at Kendriya Vidyalaya Adilabad

In a world constantly evolving with technological advancements, it's imperative that we harness the power of innovation to address real-world challenges. At **Kendriya Vidyalaya Adilabad**, a remarkable initiative led by the student **Shlok of Class X**, under the guidance of their dedicated computer instructor, Abdul Mabood, is creating waves of change. His project, centered around assisting the elderly in performing regular tasks, is not just ambitious; it's transformative.

Abdul Mabood, a visionary in his own right, recognized the potential of merging natural language processing (NLP) and computer vision within the domain of artificial intelligence (AI) to serve a noble cause. The idea was to develop a system that could understand and respond to the needs of the elderly population, ultimately enhancing their quality of life. This led to the inception of a groundbreaking project that is set to be deployed in a robotic form.

The concept behind the project is as ingenious as it is compassionate. Through the integration of NLP, the system can comprehend verbal commands and inquiries from the elderly users. Whether it's requesting assistance with household chores, fetching items, or simply engaging in conversation, the technology is designed to interpret and respond effectively. Furthermore, with computer vision capabilities, the system can perceive the environment, recognize objects, and navigate through spaces autonomously.

What sets this project apart is its focus on addressing the specific needs and challenges faced by the elderly. Tasks that may seem trivial to some can pose significant obstacles for seniors, especially those with limited mobility or cognitive impairments. By leveraging AI-driven solutions, the students aim to bridge this gap and provide invaluable support to this often-underserved demographic.

The implications of this project extend far beyond the confines of the classroom. Not only does it showcase the potential of AI to serve humanitarian causes, but it also underscores the importance of empathy-driven innovation. In a society that often prioritizes technological advancement for commercial gain, initiatives like these serve as a reminder of the profound impact technology can have when wielded with compassion and purpose.

The journey of Shlok Class X and Abdul Mabood exemplifies the spirit of collaboration and innovation that defines the modern era. Their dedication, ingenuity, and commitment to social responsibility are truly inspiring. As their project prepares for deployment in the form of a robotic assistant, it heralds a new dawn in the realm of elder care, where technology becomes a force for empowerment and inclusion.

In conclusion, the project undertaken by Shlok Class X at Kendriya Vidyalaya Adilabad, under the mentorship of Abdul Mabood, represents a beacon of hope and progress. By harnessing the potential of AI in the service of humanity, they are not only revolutionizing elder care but also setting a precedent for future generations of innovators to follow. As we applaud their achievements, let us also reflect on the profound responsibility we all share in using technology to build a more inclusive and compassionate world.

సాక్షి

శుక్రవారం । 11 । ఆగస్టు । 2023

కార్యాలయాలు కిటకిటలాడాయి 9లో

ఆవిష్కరణలకు ఆహ్వానం

- నైపుణ్యాన్ని వెలికితీసేందుకే జిల్లాలో 'ఇంటింటా ఇన్నోవేటర్'
- ఈనెల 12వరకు దరఖాస్తు గడువు
- భావిశాస్త్రవేత్తలుగా తీర్చిదిద్దేందుకే..
- స్వాతంత్య్ర దినోత్సవాన ప్రదర్శన

ఆదిలాబాద్‌టౌన్‌: నూతన ఆవిష్కరణలకు ప్రభుత్వం ఆహ్వానం పలుకుతోంది. వివిధ రంగాలకు చెందిన వ్యక్తుల్లోని నైపుణ్యాన్ని వెలికితీసేందుకు ఇంటింటా ఇన్నోవేటర్‌ కార్యక్రమాన్ని నిర్వహిస్తోంది. విద్యార్థులు, యువత, రైతులు, విద్యావేత్తలు, వ్యాపారులు.. ఇలా ఎవరైనా వయస్సుతో సంబంధం లేకుండా ప్రదర్శనలు తయారు చేయవచ్చు. అందరికీ ఉపయోగపడేలా ఉన్న ఆవిష్కరణలను ఎంపిక చేసి స్వాతంత్య్ర దినోత్సవ వేడుకల సందర్భంగా జిల్లా కేంద్రంలోని పరేడ్‌ మైదానంలో ప్రదర్శన కోసం ఉంచుతారు. జిల్లా స్థాయిలో ఉత్తమ ప్రదర్శనలుగా ఎంపికైన వాటిని రాష్ట్రస్థాయికి పంపుతారు. రాష్ట్రస్థాయిలో ప్రతిభ కనబర్చిన వారికి ప్రశంసాపత్రంతో పాటు నగదు బహుమతులు అందజేస్తారు. ఇదివరకు జిల్లాలో ఇద్దరు రాష్ట్రస్థాయిలో [illegible]

రూ.లక్ష నగదు అందజేయగా, మరొకరికి టీ-హబ్‌లో ఉద్యోగం కల్పించారు.

గతేడాది తయారు చేసిన పరికరాలు

గతేడాది జిల్లాలో పలువురు ప్రజలకు ఉపయోగపడే పరికరాలు తయారు చేశారు. కేంద్రీయ విద్యాలయంలో చదివే శ్లోక్ అనే విద్యార్థి దివ్యాంగులకు ఉపయోగపడే సాఫ్ట్‌వేర్‌ తయారు చేశారు. అలాగే జిల్లా వ్యవసాయశాఖ కార్యాలయంలో టెక్నికల్‌ ఏవోగా పనిచేస్తున్న శ్రీనివాస్‌రెడ్డి విత్తనాలు నాటే ట్రాక్టర్‌ నమూనాను తయారు చేశారు. నితిన్‌ అనే వ్యక్తి ఆదిలాబాద్‌ యాప్‌, వసీంరజ్‌ అనే వ్యక్తి రోబో సాఫ్ట్‌వేర్‌, భీంపూర్‌ మండలానికి చెందిన వినోద్‌రెడ్డి యూరియా చల్లే పరికరాన్ని తయారు చేశారు. వీరితో పాటు పలువురు మరికొన్ని ఆవిష్కరణలు రూపొందించి అధికారులు, ప్రజాప్రతినిధుల మన్ననలు పొందారు.

నూతన ఆవిష్కరణలకు శ్రీకారం

నిత్య జీవితంలో ప్రజలు ఎదుర్కొనే సమస్యల పరిష్కారానికి దారిచూపడం, వినూత్న రీతిలో [illegible]

ఉపయోగపడే విధంగా ప్రాజెక్టులు రూపొందించడం.. ఇలా నూతన ఆవిష్కరణలు తయారు చేసేందుకు ప్రభుత్వం దరఖాస్తులు ఆహ్వానిస్తోంది. అధికారులు ఏటా దరఖాస్తులు స్వీకరించి ఉత్తమ ఆవిష్కరణలను ఎంపిక చేసి పంద్రాగస్టు రోజు ప్రదర్శనలు తిలకించేలా స్టాల్లో అందుబాటులో ఉంచుతారు. వీటిలో ఉత్తమమైన వాటిని ఎంపిక చేసి రాష్ట్రస్థాయికి పంపుతారు. రాష్ట్రస్థాయిలో ఎంపికైన వాటికి ప్రభుత్వం రూ.లక్ష నగదుతో పాటు ప్రశంసాపత్రాలు అందజేస్తుంది. ఇంటింటా ఇన్నోవేటర్‌ కార్యక్రమం ప్రతీ ఒక్కరిలోని ప్రతిభను వెలికితీసేందుకు దోహదం చేస్తోంది. తయారు చేసిన ప్రాజెక్టులకు సంబంధించిన ఫొటోలను 9100678540 నంబర్‌కు వాట్సాప్‌ చేయాల్సి ఉంటుంది. తెలంగాణ స్టేట్‌ ఇన్నోవేషన్‌ సెల్‌ నుంచి జిల్లా స్థాయికి ఎంపికైన వాటిని సంబంధిత అధికారులకు పంపిస్తారు. ఏవైనా సందేహాలుంటే జిల్లా సైన్స్‌ అధికారి రఘురమణను [illegible]

ప్రతిభను వెలికితీసేందుకే..

ఇంటింటా ఇన్నోవేటర్‌ కార్యక్రమంలో ఎవరైనా పాల్గొనవచ్చు. మేధావులు, విద్యార్థులు, మహిళలు, మెకానిక్‌లు ఇలా అన్ని రంగాలవారు ఆవిష్కరణలు తయారు చేయవచ్చు. ఈనెల 12వరకు దరఖాస్తు గడువు ఉంది. గతంలో జిల్లా నుంచి ఇద్దరు రాష్ట్రస్థాయి అవార్డులు పొందారు. వారికి నగదు పారితోషికం ప్రభుత్వం అందజేసింది. ఉత్తమ ప్రతిభ కనబర్చిన వారికి ప్రభుత్వ గుర్తింపు లభిస్తుంది. తయారు చేసిన ప్రదర్శనలను ఈనెల 15న జిల్లా కేంద్రంలోని పోలీసు పరేడ్‌ మైదానంలో ప్రదర్శిస్తాం. – రఘురమణ, జిల్లా సైన్స్‌ అధికారి

11/08/2023 | Adilabad(Adilabad District) | Page : 7
Source : https://epaper.sakshi.com/

COUNSELLOR DESK

CAREER GUIDANCE

MENTAL HEALTH WEEK PROGRAM

ACTIVITIES TO ENHANCE ABILITY IN CHILDREN

GROUP GUIDANCE PROGRAM

GIRL SAFETY PROGRAMS

VISIT TO WORKPLACE

शिक्षक व छात्रों की उपलब्धियाँ

PPC 0.7 प्रदर्शनी में चयनित कलाकृति

शीर्षक – **विकसित भारत**

हमने अपने कलाकृति में भारत की विकसित अवस्था को दर्शाया है, जैसा कि विदित है भारत ने गुलामी का भयावह मंजर देखा है, और भारत की आजादी के कई वर्षों बाद आज विकास के चरम पर है,

और विकसित भारत सिर्फ कई बड़ी बड़ी संस्थाओं और कार्यों की वजह से ही नही साथ साथ एक छोटे तबके के कामगार और मजदूर का भी इसमें महत्त्वपूर्ण सहयोग रहा है, और इस को अपने कलाकृति में व्यक्त करने के लिए हमने उन्ही के हाथों द्वारा बनाई जाने वाले चीजे, जैसे लकड़ी के चम्मच और लकड़ी का प्रयोग किया, साथ ही साथ आदिलाबाद के पास एक स्थान है – निर्मल जो लकड़ी के काम और लकड़ी की लोक कला के लिए प्रसिद्ध है ।

इसलिए हमने कलाकृति बनाने के लिए यह माध्यम चुना ।

इसके साथ ही इस कृति में सिर्फ 9th की छात्राओं के द्वारा ही काम किया गया है, जो नारी शक्ति को प्रदर्शित करता है, जिनके बिना विकसित भारत संभव नहीं ।

इस कृति के कंपोजिशन में जिस मानव आकृति का प्रयोग किया गया है, वह एक खिलाड़ी है, जो जैवलिन फेंक रहा है, जो भारत के खेल के क्षेत्र में सफलता को दिखाता है, क्योंकि पहले भारत में खेल के लिए न तो इतने संसाधन थे और न ही व्यवस्था, लेकिन अब खेलो इंडिया और इसी तरह के कई कार्यक्रम खेलों की उन्नति के लिए चलाए जा रहे है, जिस से खेलों के क्षेत्र में भारत की सहभागिता बढ़ी है।

भारत अब अंतरिक्ष के क्षेत्र में भी अग्रणी हो **रहा** है, पहले इसरो के रैकेट को साइकिल पर रख कर लांच पैड पर ले जाया जाता था, लेकिन अब भारत के कई मिशन दुनिया के लिए उदाहरण का कार्य कर रहे है, जैसे आदित्य एल 1 और चंद्रयान, अभी हाल ही में भारत ऐसा पहला देश बना जिसने चांद के साउथ पोल पर कदम रखा, जिसे दिखाने के लिए हमने चंद्रयान 3 रैकेट को अपने कृति में बनाया है।

नई सड़के और हाईवे बनाने से भारत की प्रगति में तेजी आई है, क्योंकि हम अब कही भी आसानी से आ जा सकते है, और इस से व्यापार में भी सुविधा हुई है, पहले हमारे पास सड़कें नही थी, और अब ऐसे स्थानों पर भी सड़के बन रही है जहा संभव ही नहीं था , जैसे अटल सुरंग । हमने देश की प्रगति को दर्शाने के लिए करती में एक हाईवे का प्रयोग किया है।

और ऐसे ही कई क्षेत्रों में प्रगति भारत के विकसित भारत बनाने की कहानी है, जो हमने भारत का नक्शा बना कर व्यक्त की है । क्योंकि प्रत्येक कार्य और भारत का प्रत्येक निवासी देश को विकसित भारत बनाएगा ।।।।।

Team (All from class 9th)

Shloka
Hasini
Shreya
Madhusri
Sahasra
S.Srinidhi
G.Srinidhi
Aliveni
Bhavani

Guide- Amit Verma (TGT Art education)

कु. श्लोका
कक्षा नवमी

राज्य स्तरीय बाल वैज्ञानिक प्रदर्शनी 2023-24 में प्रतिभाग

Immunity is the main process that defends the body from infections and sometimes, the body may be unable to elicit enough responses that can eliminate them. Therefore, it is important to consume immune-boosting foods to strengthen the body against seasonal infections such as cases of flu and viral infections, cancer, arthritis, allergies.

Following food items will help you to improve your immunity
Tulsi is rich in Vitamin C and zinc. It thus acts as a natural immunity booster and keeps infections at bay. It has immense anti-bacterial, anti-viral and anti-fungal properties which protect us from a variety of infections.
Turmeric also boosts immunity levels. Its anti-bacterial, anti-viral and anti-fungal properties protect us from a variety of infections.
Amla with its cytoprotective properties help boost production of white blood cells, thus strengthening our immune army. Its regular consumption also help remove toxins from the body. Amla also works wonders for digestive issues like constipation and acidity.
Neem has anti-microbial and anti-fungal properties. It is an excellent blood purifier. It removes toxins from the body and cleanses the blood which supports healthy skin. The bitter taste present in it helps in reducing heat and cools down the body.
Hibiscus Tea Is Rich In Powerful Antioxidants And Thus This Tea Helps Prevent Damage To Cells By Destroying Harmful Molecule. Hibiscus Is Also Loaded With Vitamin K Which Helps In Bone Metabolism And Blood Clotting.
Cloves are aromatic spice buds that are not only delicious but also highly beneficial for your immune system. They are rich in eugenol, a compound with antioxidant and anti-inflammatory properties.
ginger has been used for medicinal purposes, due to its rich nutritional properties. Even in several Ayurvedic medicines ginger has been used as an active ingredient and this is due to the presence of Gingerol, an active component that makes ginger a perfect immunity booster
Curcumin is the most biologically active component of the turmeric root and appears to be an antimicrobial agent. Curcumin cooperates with various cells such as macrophages, dendritic cells, B, T, and natural killer cells to modify the body's defence capacity.

Black pepper's active compounds have a role in boosting white blood cells, which your body uses to fight off invading bacteria and viruses.

National Level Karate Championship - 2024
Third place - Jatin Rathod - class- 1

विद्यालय गतिविधियाँ

केंद्रीय विद्यालय स्थापना दिवस

चित्रकला प्रतियोगिता

वार्षिक खेल दिवस 2023-24

Warmly Welcomes You
To
ANNUAL SPORTS

राष्ट्रीय युवा दिवस
चित्रकला व मैराथन प्रतियोगिता

NATIONAL
YOUTH
DAY

I ♥ ADILABAD
YOUTH DAY CELEBRATIONS
KENDRIYA VIDYALAYA - ADILABAD

KENDRIYA VIDYALAYA ADILABAD

वीर बाल दिवस

चित्रकला प्रतियोगिता

संगीत कक्षायें

परीक्षा पे चर्चा 0.7

चित्रकला प्रतियोगिता

1

2

3

4

Every one want to
BE champion
But that's wrong.
Time management
Exam

5

FIRE AND WATER SAFETY DEMO

Fire and water safety are measures taken to prevent and mitigate the risks associated with fires and water-related accidents. This includes fire prevention techniques such as proper storage of flammable materials, installation of smoke detectors, and creating escape plans in case of a fire. Water safety involves measures to prevent drowning accidents, such as learning to swim, wearing life jackets, and being cautious around bodies of water.

परीक्षा पे चर्चा 0.7 का लाइव प्रसारण देखते छात्र

अंतर्राष्ट्रीय बाजरा वर्ष - 2023

चित्रकला व रंगोली प्रतियोगिता

MILLETS - SMALL
GRAINS - BIG NUTRITION
INTERNATIONAL MILLETS
YEAR - 2023

MILLETS
2023
International
Year of
Nutrition

Grains
Rangoli
Inside
IV Class

HANDWASH DEMO

गणतंत्र दिवस 2024

KENDRIYA VIDYALAYA ADILABAD
WELCOMES YOU
Charcha 2024

KENDRIYA
YA ADILABAD

Our Team

Smt. G. Vijayalaxmi
Principal

Rajesh kumar
TGT Sanskrit

Ashok Atukapuram
Librarian

Manoj
TGT Hindi

Deeksha Tanwar
TGT Science

Vishakha Waghmare
TGT English

Shashikant Ola
TGT Work education

Hemant kumar
TGT Math

Amit Verma
TGT Art education

Ojas Soni
TGT P&HE

Sreeja Mothikar
PRT

Prayag Motghare
PRT

Bam Rahul
PRT

Surendra Kumar
PRT Music

Dhiraj Devrao Mane
PRT

Sachin Wadgure
PRT

Chetla Bharath Kumar
PRT

Ankit Sen
SSA

Rahul Shrihari Kendre
JSA

Ramesh Peraka
Sub Staff

Md. Abdul Mabood
Computer Instructor

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

केंद्रीय विद्यालय आदिलाबाद

An autonomous body Under Ministry of Education, Government of India
CBSE Affilliation number - 3600020 | CBSE school number - 59543

Address- Nirmithi Kendra, old DM house, Adilabad - 504001
Telanana